हिन्दी साहित्य का इतिहास : One Liner Questions

1. हिन्दी शब्द का प्रथम प्रयोग – सर्फुद्दीन यज्दी की पुस्तक 'जफरनामा' में।
2. गार्सा–दा–तासी की पुस्तक का उर्दू अनुवाद मौलवी करीमुद्दीन ने 'तबकातुश्शुअरा /तजिकिराई शुअराई हिन्दी'नामक शीर्षक से किया।
3. स्वयंभु के ग्रंथ 'परमचरिउ' को जैन रामायण या नागकुमार चरित्र भी कहा जाता है
4. कृष्ण के भाई नेमि के चरित्रवर्णन युक्त ग्रंथ को 'अरिष्टनेमिचरिउ' या हरिवंशपुराण भी कहा जाता है।
5. गोरखनाथ ने 'ह' से सूर्य व 'ठ' से चन्द्रमा का अर्थ बताया
6. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गोरखनाथ की रचनाओं को 'नाथ सिद्धों की बांनियॉ' शीर्षक से संकलित की है।
7. गार्सा–दा–तासी ने रासो शब्द की उत्पत्ति राजसूय से , नरोत्तम स्वामी ने रसिक से ,शुक्ल ने रसायण से ,व हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रास नामे छंद या शब्द से मानी है।
8. सिद्ध सरहपा को सहजयान (सिद्ध मार्ग) का प्रवर्तक माना गया है।
9. रासों ग्रथों में प्रथम रासों ग्रंथ भरतेश्वर बाहुबली रास है।
10. प्रथ्वीराज रासो का सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग ''कैमासा वध'' है ,इसका सर्वाधिक प्रमाणिक संस्करण डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने 'संयोपता नाम' से प्रकाशित किया।
11. डॉ.वूलर ने सन् 1875 में प्रथ्वीराज विजय की खण्डित प्रति के आधार पर इसे 'जाली ग्रंथ'कहा।
12. आदिकालीन हिन्दी साहित्य के प्रमुख तथ्य –

(a) प्राचीनतम फागु काव्य –जिनदत्त सूरिफागु

(b) प्राचीनतम गद्य (अपभ्रंश) – कुवलयमाला

(c) प्राचीनतम श्रंगारी काव्य – राउरवेलि

(d) प्राचीनतम रासो काव्य – भरतेश्वर बाहुबलि रास (यह खण्डकाव्य है।)

(e) हिन्दी का प्रथम काव्य – श्रावकाचार (देवसेन कृत)

(f) हिन्दी का प्रथम महाकाव्य – प्रथ्वीराज रासो

13. उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन के जनक रामानंद है –
'' भक्ति द्राविड़ ऊपजी , लाए रामानंद । प्रकट कियो तब कबीर ने , सप्तदीप नवखंड ''
14. हनुमान्नाटक की रचना ह्रदयराम ने की ।
15. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने घनानेद के 100 से अधिक छंदो को 'सुजानशतक' नाम से संकलित किया है।
16. मैथिलीशरण गुप्त ने सन 1912 में भारत–भारती के द्वारा राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्धी प्राप्त की।
17. 'दीया' महादेवी वर्मा की खड़ी बोली में लिखित प्रथम रचना है।
18. जयशंकर प्रसाद को 'आनंदवाद का प्रवर्तक' कहा जाता है।
19. 'नई कविता' शब्द का प्रथम प्रयोग सन 1952 में अज्ञेय ने एक रेडियो वार्ता में किया।

MANAV SHARMA

20. सन 1954 में जगदीश गुप्त द्वारा संपादित पत्रिका 'नई कविता' प्रकाशित हुई । जगदीश गुप्त व रामस्वरूप चतुर्वेदी को नई कविता का प्रवर्तक कवि माना जाता है।
21. सन 1980 को 'कविता की वापसी का वर्ष'कहा जाता है।
22. खड़ी बाली की प्रारम्भिक रचनाओं में जटमल की 'गोरा–बादल की कथा (1623 ई.)' तथा रामप्रसाद निरंजनी की 'भाषा योग वशिष्ठ(1741) प्रमुख है।'
23. लल्लू लाल के ग्रथों का अनुवाद डब्ल्यू.हेलिंग्स ने अंग्रेजी में किया।
24. बालकृष्ण भट्ट , भारतेन्दु युग का सर्वश्रेष्ठ निबंधकार था ,इनका प्रथम निबंध है –'कलिराज की सभा'
25. बालमुकुन्द गुप्त के अखबार 'बंगवासी' को ''भाषा गढ़ने की टकसाल'' कहा जाता था।
26. हिन्दी में वैज्ञानिक निबंधो का प्रारम्भक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ही है।
27. भारत में यूरोपियन ढंग की पहली रंगशाला सर्वप्रथम 1756 ई. में कलकत्ता में 'प्ले हाउस'के नाम से बनी थी।
28. हिन्दी कविता में उलटबासियॉ , नाथ साहित्य की देन है।
29. ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को 'स्वर्णकाल' नाम दिया था।
30. प्रथ्वीराज रासों की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लगाने वाले प्रथम विद्धान डॉ. वूलर थे , उन्होनें इसे 'जाली ग्रंथ' कहा।
31. बंगाल में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना 'सर विलियम जोन्स' ने की
32. हिंदी के आरम्भिक रूप को भोलाशंकर व्यास ने अवहठ्ठ कहा।
33. अपभ्रंश व्याकरण 'शब्दानुशासन' के रचियता हेमचन्द्र सूरी है।
34. बीसलदेव रासो ग्रंथ की पंक्ति है –''नाल्ह रसायण आरंभई,सारदा तूठी ब्रह्मकुमारि...''
35. बासलदेव रासो , मेघदूत (कालिदास) व संदेशरासक(अब्दुर्रहमान)परंपरा का विकासक ग्रंथ है।
36. विद्यापति की पंक्ति है – ''देसिल बयना सब जन मिठ्ठा,तं हैसेउ जंपउ अवहठ्ठा''
37. प्राकृत पैंगुलम(अपभ्रंश का ग्रंथ) की रचना लक्ष्मीधर ने की।
38. छायावाद का प्रथम विद्रोही कवि – 'निराला' है।
39. 'फूलो का गुच्छा' सुमित्रानंदन पंत का काव्य संग्रह है।
40. रामधारी सिंह दिनकर को 'अनल' कवि कहा जाता है।
41. मतिराम को 'पुराने पंथ का पथिक' कहा जाता है।
42. प्रेमचंद के पत्र 'सोजे वतन' की भाषा उर्दू थी।
43. भारतेन्दु के विद्यागुरू – शिवप्रसाद सितारेहिन्द
44. अज्ञेय को कठिन गद्य का प्रेत कहा जाता हैं
45. अयोध्या सिंह उपाध्याय को 'कवि सम्राट' कहा जाता है। हीरऔध को 'भ्रमरानंद' व 'परम्पराजीवी लेखक भी कहा जाता है।'
46. वृन्दावन लाल वर्मा को 'बुन्देलखण्ड का चन्दरबरदाई' कहा जाता है।
47. पुरूषोत्तम दास टंडन को 'हिन्दी का प्रहरी' कहा जाता है।
48. दुष्यंत कुमार का नाम गज़ल लेखन में भी आता है।
49. सूरदास की सर्वाधिक प्रमाणिक रचना 'सूरसागर' है।
50. रीतिकाल आचार्य परंपरा का अन्तिम कवि –पद्माकर
51. कवि धूमिल का वास्तविक नाम – सुदामा पाण्डेय
52. बलवनामा(नागार्जुन) की कथा वहीं से शुरू हाती है , जहॉ से गोदान(प्रेमचंद) की समाप्ति होती है।
53. नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्ति मध्यमवर्गीय मनुष्य की भावानुभूतियों से जुड़ी हुई है।

MANAV SHARMA

54. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – ''ज्ञान के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है , भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।''
55. डॉ. श्यामसुन्दर दास ने श्रंगारकाल के उत्तरार्ध को 'नवीन विकास काल ' कहा है।
56. 'हल्दीघाटी(श्यामनारयण पाण्डेय)' खड़ी बोली हिन्दी में वीर रस का सुन्दर प्रगंध काव्य है।
57. हिन्दी में एतिहासिक उपन्यासों की परम्परा को जन्म देने का श्रेय –किशोरी लाल गोस्वामी को जाता है।
58. 'बिल्लोसुर बकरिहा' एक प्रसिद्ध उपन्यास है जो कि विवेकानंद की जीवनी पर आधारित है। (निरालाकृत)
59. रामनरेश त्रिपाठी कृत 'कविता कौमुदी' में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पूर्व तक के 89 कवियों की जीवनी–रचनाओं का वर्णन है।
60. 'पादरी केई' शरा लिखित 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' भी हिन्दी का इतिहास गंथ है।
61. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' हिन्दी का सर्वाधिक व्यवस्थित इतिहास है।
62. ''हिन्दी के मुसलमान कवि '' नामक पुस्तक के लेखक गंगाप्रसाद सिंह है।
63. डॉ. माताप्रसाद गुप्त कृत 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नामक पुस्तक को 'आधुनिक साहित्य सम्पत्ति का बीजक' कहा है।
64. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने ग्रंथ '' वाङ्मय विमर्श'' में आधुनिक काल को 'प्रेमकाल' कहा है।
65. 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' हजारी प्रसाद का व्याख्यान ग्रंथ है।
66. गेय पदो की परंपरा सर्वप्रथम सिद्धों ने शुरू की
67. नाथों की प्रमुख भाषा 'अवहट्ठ' थी
68. 'भविसयत्तकहा(धनपाल कृत)' को विन्टरनित्ज नामक विद्वान ने 'रोमांटिक महाकाव्य' कहा।
69. डॉ. मोतीलाल मेनारिया के अनुसार डिंगल का सबसे पहले प्रयोग जोधपुर के कवि 'बॉकिदास' की कृति 'कुकवि बत्तीसी (सन 130 ई.)' में किया गया।
70. डॉ. वूलर ने 1875 में 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी ' को पत्र लिखकर प्रथ्वीराज रासो के प्रकाशन पर रोक लगवाई थी
71. प्रथ्वीराज रासों में 'सर्ग' को 'समय' कहा गया है।
72. राहुल सांस्कृत्यायन ने हम्मीर रासो के छंदों को 'जज्वल' नामक कवि की रचना है।
73. वारकरी सम्प्रदाय का संबंध 'सिद्ध साहित्य' से है।
74. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ''ढ़ोलामारू रा दूल्हा'' के दोहों को हेमचन्द्र सूरी व बिहारी के दोहों के बीच की कड़ी माना है।
75. ब्रज और अवधि को मिलकर काव्य रचना करने का आरम्भ अमीर खुसरो को जाता हैं
76. आदिकाल के सबसे प्रसिद्ध अन्तिम कवि – अमीर खुसरो
77. आदिकाल का सबसे विवादास्पद ग्रथ – प्रथ्वीराज रासो है , इसकी एतिहासिकता सबसे विवादास्पद है।
78. हिन्दी साहित्य का सबसे विवादास्पद काल आदिकाल है।
79. प्राकृत पैगुलम का मूल केन्द्र 'छंद' हैं
80. खुमाण रासो की प्रमाणिक कृति , पुणे संग्रहालय में मौजूद है।
81. बीसलदेव रासो में कुल 128 छंद है (गेय मुक्तक काव्य)
82. हर्षवर्धन साम्राज्य का पतन , आदिकाल की राजनीतिक प्रष्ठभूमि थी
83. 'दोहा' छंद आदिकाल की देन है

MANAV SHARMA

84. आदिकालीन साहित्य में वियोग श्रंगार की सर्वश्रेष्ठ रचना 'संदेशरासक' है।
85. वज्रयानियों ने बौद्ध धर्म प्रचारार्थ लोकभाषा में साहित्य लिखा
86. बौद्धो द्वारा गाये जाने वाले पद 'चर्यापद' कहलाते है।
87. उमापति , मैथिजी भाषा के कवि थे (विद्यापति की तरह)
88. कनकामर मुनि ने 'करकंड चरित' लिखा।
89. श्रीधर ने 'रणमल छंद लिखे
90. प्रथ्वीराज रासो की पंक्ति है – ''मनहुं कला ससभान कला सौलह सौ बन्निय''
91. ''अभि–अंतर की त्याणै माया ,दुबध्या मेटि सहज में रहे'' पंक्ति के रचियता गोरखनाथ है।
92. 'पुरूष कहाणी हौं कहो जसु पत्थाने पुन्नु'..... पंक्ति विद्यापति की है।
93. अवधूत मत ''नाथ संप्रदाय '' का पर्यायवाची शब्द है। इसे हजारी द्विवेदी ने अवधूत मत कहा था
94. 'देशीनाममाला' हेमचन्द्र की रचना है।
95. आधुनिक कविताऍ (रणधीर सिन्हा) , निषेध(जगदीश चतुर्वेदी) , पहचान(अशोक वाजपेयी) , संचेतन(प्रदीप सिंह)
96. ''63 श्लाका पुरूषों का जीवन वर्णन वाला ग्रंथ '' – महापुराण
97. कर्नल जेम्स टॉड , प्रथ्वीराज रासो के प्रथम विदेशी उद्धारकर्ता थे।
98. 'भल्ला हुआ जो मारिया ,बहिणी म्हारा कंतु....' नामक पंक्ति हेमचन्द्र की हैं
99. 'एक नार ने अचरज किया , साफप मार पिंजरे में दिया...' (अमीर खुसरो)
100. उलटबासियों का पर्व रूप सिद्धों की भाषा में मिलता है।
101. 'प्राकृत प्रकाश' वररूचि की रचना हैं
102. हिन्दी रास परम्परा की प्रथम एतिहासिक रचना का नाम पंच पाण्डव रास है।
103. राजस्थानी भाषा में रचित रासो ग्रथ – खुमाण रासो
104. 'सन्धा भाषा' के प्रयोगकर्ता – मुनिदत्त
105. प्रथ्वीराज रासो की जानकारी सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टॉड ने दी।
106. प्राकृत प्रिगल सूत्र के पदों का संकलन 'विधाधर' ने किया
107. हरप्रसाद शास्त्री ने 'बौद्धज्ञान– ओ –दोहा' का प्रकाशन कराया
108. 'उस समय जैसे गाथा या गाहा से प्राकृत का बोध होता था , वैसे ही दोहा या दूहा कहने से अपभ्रंश का'' कथन के वक्ता है – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
109. सिद्धो का सही क्रम :– सरहपा–लुइपा–विरूपा–कण्हपा।
110. निर्गुण भक्ति का आदिस्त्रोत 'श्वेताश्वेतर' उपनिषद है।
111. भक्ति के आद्य प्रवर्तक रामानंद के गुरू कांचीपूर्ण थे
112. शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म के सूत्र '' सभी मनुष्य समान है '' , का अनुसरण किया, अतः शंकराचार्य को विद्वानों ने ''प्रच्छन्न बौद्ध' कहा है।
113. परमतत्व को कबीर ने 'राम' व गुरूनानक ने 'सबद' कहा है।
114. रहीमदास को संतकवि नही , धर्मनिरवेक्ष कवि माना जाता है।
115. दुरसा आढ़ा कृत 'विरूद्ध छिहत्तरी' एक भक्तिकालीन वीरकाव्य कृति है, जिसमें राणा प्रताप का यशोगान है।
116. रागानुभक्ति , पुष्टिमार्ग में आती है , हॉलाकि मीरा की भक्ति का भाव –स्वकीया है।
117. अनेकार्थ मंजरी , नंददास की रचना है।
118. निम्बार्क सम्प्रदाय के श्रीभट्ट ने ' युगलशतक ' रचना लिखी।
119. निम्बकरचार्य को सुदर्शन चक्रका अवतार माना जाता है।

MANAV SHARMA

120. निजमत सम्प्रदाय ,हरिदासी सम्प्रदाय पर आधृत है।
121. प्रपन्न कल्पवली ग्रंथ , निम्बकाचार्य ने लिखि।
122. चैतन्य सम्प्रदाय का दार्शनिक मत 'अचिन्त्य भेदाभेदवाद' है।
123. स्वाती हितहरिवंश ने हितचौरासी नामक ग्रंथ लिखा
124. रास पंचाध्यायी(नंददास) का प्रमुख छंद रोला है।
125. गदाधर भट्ट का सम्बन्ध चैतन्रू सम्प्रदाय से है।
126. श्रंगार रस मंडन , विठ्ठलनाथ की रचना है
127. सर्वाधिक कृष्णभक्ति की रचनाएँ ,ध्रुवदास ने लिखि (42 रचनाएँ)
128. नंददास की गोपियॉ , सूरदास से अधिक तर्कशील है।
129. पूर्व मीमांसा भाष्य , वल्लभाचार्य की रचना है
130. 'सूर कवित्त सुनि कौन कवि, जो नहि सिर चालन करै.. —(नाभादास)'
131. कहा कहौ बैकुण्ठहि जाय..... , जब तै प्रीति श्याम से करी... —(परमानंद दास)
132. जुगलभान चरित्र ,कृष्णदास ने लिखा
133. हितजू को मंगल , चतुर्भुजदास ने लिखा
134. राधा सुधानिधि ,हितहरिवंश की रचना है।
135. ब्रह्म माया से सर्वथा अलिप्त अर्थात शुद्ध है – शुद्धाद्वैतवाद
136. दृष्टिकूट पद का अर्थ है – शब्दार्थ चमत्कार युक्त पद
137. साहित्य लहरी में सर्वाधिक विवादास्पद है – विषयवस्तु
138. सूरदास का विवादास्पद ग्रंथ – साहित्य लहरी
139. सत्यनारायण कविरत्न को ब्रजकोकिल कहा जाता है ,इन्होने भ्रमरदूत रचना लिखी
140. अष्टछाप का प्रथम कवि – कुंभनदास
141. 'उत्तम जाति है ब्रह्मानि,देखत चित्त लुभाय..' के रचनाकार रहीमदास है।
142. 'लोटा तुलसीदास का लाख टका मेरा मोल' रचना होलरॉय की है।
143. सूरदास के पदों पर सर्वाधिक प्रभाव विद्यापति का था ।
144. उत्तरभारत में कृष्णभक्ति को नई प्रेरणा वल्लभाचार्य ने दी
145. श्रंगार सोरठा , रहीम की रचना है।
146. शुक्ल के अनुसार – 'सूर ही वात्सल्य है , व वात्सल्य ही सूर है।
147. भागवत दशम स्कन्ध भाषा' नंददास की रचना है।
148. तुलसी ने 9 जबकि सूरदास ने 11 भक्ति रूपों का वर्णन है।
149. भ्रमरगीत परम्परा का प्रवर्तक – सूरदास
150. रस मंजरी , नंददास की नायिका भेद संबंधी रचना है।
151. 'द्वादश यश' के रचनाकार चतुर्भुजदास है।
152. महाभारत के आरण्यक पर्व में रामकथा का वर्णन है।
153. शुक्ल के अनुसार भक्ति को उॅच–नीच के लिये रामानन्द ने खोला
154. आरति कीजै हनुमान लला की.....रामानंद ने लिखि
155. 'लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके ' हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसी तथ्य को बोलकर तुलसी को 'समन्वय की विराट चेष्टा' कहा है।
156. दूलह सिय राम वैदेही.....(गीतावली)
157. लंक लीलिबै को काल रसना पसारी है.....(कवितावली)
158. अवधेश के बालक चार सदा ,तुलसी मन मंदिर में विचरै.....(कवितावली)
159. राम के बालरूप की झॉकी , तुलसी ने कवितावली में सर्वाधिक चित्रित की।

MANAV SHARMA

160. केसव कहि न जाय का कहिए..... (तुलसीदास का पद है।)
161. अव लौ नसानी , अब न नसैहो.....(विनयपत्रिका)
162. जाके प्रिय न राम वैदेही..... (विनयपत्रिका)
163. विनयपत्रिका का प्रधान रस – शांत रस
164. तुलसी का दार्शनिक मत – विशिष्टाद्वैतवाद
165. तुलसी की मान्यताएँ – श्री सम्प्रदाय से मेल खाती है।
166. रामानंद की शिष्य परंपरा में तुलसी 7 वीं पीढ़ी में आते है।
167. भक्तमाल में नाभादास ने 200 भक्तो के जीवन चरित्र का वर्णन किया है।
168. निम्बार्क सम्प्रदाय के परशुराम देव ने 'रघुनाथ चरित'की रचना की।
169. सन् नौ सै सत्ताइस अहा ,कथा अरंभ बैन कवि कहा''पंक्तियॉ –'पद्मावत' जायसी
170. सूफी कवि नूर मोहम्मद ने 'अनुराग बॉसुरी 'में दोहे की जगह 'बरवै' छन्द का प्रयोग किया है।
171. शुक्ल ने सूफी कवियों की प्रेम पद्धति में 'प्रेम की पीर'को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है।
172. सूफी कवियों का सबसे प्रिय अलंकार – समासोक्ति अलंकार
173. भारतीय अद्वैतवाद में जो स्थान माया का है ,सूफी काव्य में वही स्थान शैतान का है।
174. रामानुजाचार्य ने ब्रह्मसूत्र पर श्रीभाष्य नामक ग्रंथ लिखा
175. भक्ति के लिये वर्णाश्रम को रामानंद ने व्यर्थ बताया है।
176. नाभादास , रहीम ,मीरा आदि तुलसीदास के समकालीन थे।
177. तुलसीदास अकबर के समकालीन थे ,पर आइने–अकबरी में इसका उल्लेख नहीं है।
178. आचार्य शुक्ल के अनुसार भक्ति में रसिकता का समावेश अयोध्या के रामचरणदास ने किया जबकि डॉ. भगवती प्रसाद सिंह के अनुसार रसिकता में प्रवेश का सर्वमान्य प्रवर्तक है –अग्रदास।
179. आचार्य शुक्ल ने तुलसी को हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ कवि माना है , उनका तुलसी के प्रति मोह व कबीर के प्रति उपेक्षा का भाव दिखाई पड़ता है।
180. रामचरित मानस का सर्वमान्य रस– शांत रस
181. रामचरित मानस के बाद 'विनयपत्रिका' तुलसी की उत्कृष्ट रचना है।
182. कृष्ण भक्ति को शास्त्रीय आकार प्रदान करने का प्रयत्न– जीव गोस्वामी जी महाराज
183. शुक्ल व रामकुमार वर्मा ने विद्यापति को 'शुद्ध श्रंगारी' कवि माना है।
184. शुक्ल ने सूरदास का 'जीवनोत्सव का कवि' कहा है।
185. सूरदास के भ्रमरगीतो के तीन रूप है – प्रथम भ्रमरगीत भागवत का अनुवाद है ,द्वितीय भ्रमरगीत में केवल एक ही पद है ,और तृतीय भ्रमरगीत में अनेको पद है।
186. सूर के भ्रमरगीतो को शुक्ल ने 'ध्वनि काव्य' की संज्ञा दी है।
187. नंददास की रास पंचाध्यायी को 'हिन्दी का गीत गोविन्द' कहा जाता है।
188. स्वामी हरदास ने 'केलिमाल' की रचना की ,इनका सखी सम्प्रदाय बॉस की टॉटियों से घिरा हुआ था ,अतः इसे '' टाट्टी सम्प्रदाय'' भी कहा गया।
189. सूरसागर के प्रथम स्कन्ध में विनय के पद वर्णित है।
190. सूरसागर के दशम स्कन्ध में सर्वाधिक गेय पद है।
191. अष्टछाप का वरिष्ठ–कनिष्ठ का जोड़ा है – कुंभ्नदास –नंददास
192. अष्टछाप का सबसे शिक्षित , ज्ञानी कवि – नंददास
193. अष्टछाप के कवियों में कुशाग्र बुद्धि का होने के कारण मंदिर के प्रबन्धन का कार्य 'कृष्णदास'को मिला

MANAV SHARMA

194. सूर के बाद वात्सल्य का दूसरा सर्वश्रेष्ठ कवि –परमानंद दास
195. सहजोबाई व दयाबाई , चरणदास की शिष्याएँ थी
196. 'छिताईवार्ता' की रचना नारायणदास ने 1590 ई. में की
197. ब्रजभाषा में रामकथा गुरू गोविन्द सिंह ने लिखि , नाम था –गोविन्द रामायण
198. पौरूषैय रामायण क`लेखक नरहरि बारहठ थे।
199. पद्मनाभ ने 'कान्हड़दे प्रबन्ध' नामक रचना लिखी
200. 'निरंजनी सम्प्रदाय 'को नाथ पंथ व सन्त काव्य के बीच की कड़ी माना जाता है।
201. भक्तिकालीन समस्त काव्यधाराएँ लोकोन्मुखी थी
202. 'ब्रह्मसूत्र' के रचनाकार बादरायण थे
203. सन्त कवियो ने वैदिक परम्पराओं की आलोचना बौद्ध णर्म के प्रभाव से की है।
204. 'सिद्धान्त पंचनामा' के रचियता राघवानंद थे
205. गुरू अर्जुनदेव(सर्वश्रेष्ठ सिक्ख गुरू कवि) ने 'सुखमनी' की रचना की ।
206. ''सगुणोपासक भक्त ,सगुण–निर्गुण दानो को मानता है , लेकिन अपनाता सगुण को ही है ,निर्गुण को ज्ञानपंथी
हेतु छोड़ देता है।'' – रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार
207. कबीर द्वारा भक्ति व ज्ञान का योग तो हुआ किन्तु 'कर्म ' की दशा नाथपंथियों जैसी ही रही' –शुक्ल ने कहा
208. नामदेव , सगुण–निर्गुण के मिश्रित भक्त कवि थे , इन्हे 'बिठोवा का भक्त' कहते है
209. कबीर का ज्ञानमार्ग , हिन्दू शास्त्रो से वर्णित है।
210. वारकरी सम्प्रदाय की प्रथम स्थापना महाराष्ट्र के संत पुंडरीक ने की थी ,
(प्रवर्तक – नामदेव)
211. 'झिलमिल झगरा झूलते बाकि रही न काहू ,गोरख अटके कालपुर कौन कहावै साहु''
– कबीर
212. भक्ति के आद्य आचार्य – रामानुजाचार्य
213. अहिंसावाद , जैन सम्प्रदाय की देन है।
214. समन्वय प्रधान होने से भक्तिकाल स्वर्णकाल है।
215. सही क्रम :– दादू – मलूकदास –सुंदरदास – अक्षर अन्नय
216. सही क्रम :– कबीर – रैदास – धर्मदास – नानक
217. 'सिद्धान्त बोध' अक्षर अन्नय की रचना है।
218. 'झरि लागे मघलिया गगन हराय.....' – धर्मदास
219. 'जै नर दुख में दुख नहीं माने.....' – रैदास
220. 'थावर जंगम कीट पतंग पूरि रह्यौ हरिराई.....' – नानक
221. पुरूरवा–उर्वशी , ऋग्वेद का प्रेमाख्यान है।
222. हरिवंश पुराण 'कृष्ण–रूक्मणि' परिणय प्रेमाख्यान है।
223. डॉ. नगेन्द्र ने शामी जातियों की आदिम प्रवृत्ति को सूफी मत का आदि स्त्रोत कहा है।
224. उस्मान की चित्रावली में शाहेवक्त के रूप में जहॉगीर की प्रशंसा की गई है।
225. जायसी के पद्मावत में 7 अर्द्धलियो के बाद एक दोहा है
(रामचरित मानस , 8 अर्द्धली के बाद एक दोहा)
226. बारहमासा का प्रारंभ आषाढ़ मास से होता है
227. पद्मावत की रचना , शेरशाह सूरी के वक्त हुई
228. सर्वाधिक प्रेमाख्यान जॉन कवि ने लिखे (79)

MANAV SHARMA

229. पद्मावत की तुलना महाकाव्यात्मक रूपकता में कामायनी से की जाती है।
230. रामकथा का आदिगायक – भगवान शंकर(रामकथा का सर्वप्रथम गायक – व्यास कवि)
231. चित्ररेखा ,रामकुमार वर्मा की रचना है, चित्रलेखा भगवती चरण वर्मा का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। (चित्ररेखा–जायसी की भी रचना थी)
232. दक्खिनी हिंदी के कवि नुसरती ने मधुमालती की कथा पर 'गुलशने इश्क' रचना लिखी
233. लालचंद ने 'पद्मिनी चरित्र' लिखा
234. 'विक्रम ध्ँसा प्रेम के बारा,सपनावती कहॅ गयउ पतारा' –मंझन
235. 'बलदीप देखा अॅगरेजा ,वहॉ जाई जेहि कठिन करेजा.. ' – उसमान
236. नल–दमयन्ती प्रेमाख्यान नरपति व्यास ने लिखा
237. रत्नसेन के पद्मावती प्रेम को शुक्ल ने 'रूपलोभ'कहा है।
238. पद्मावत का नागमति वियोग खंड , हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है।
239. विक्रम बैताल की कहानी का रचना स्त्रोत – हंसावली
240. रूप गोस्वामी ने 'उज्ज्वल नीलमणि'नामक शास्त्रीय ग्रंथ लिखा
241. 'वैष्णव सहजिया सम्प्रदाय' कृष्ण को रस तथा राधा को रति कहता है।
242. चैतन्य सम्प्रदाय कृष्ण को ब्रजेन्द्र कुमार कहता है।
243. राधावल्लभ सम्प्रदाय के माधवदास ने 'रघुनाथ लीला' नामक ग्रंथ लिखा (उन्होने 'रामरासो' भी लिखा)
244. 'अवध विलास' , लालदास की रचना है।
245. गुरूमुखी लिपि में (पंजाबी भाषा में) रामायण की रचना कर्पूरचंद ने की
246. हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हौ..... – तुलसीदास
247. 'भरत मिलाप' ईश्वर दास की रचना है।
248. रामानंदी वैष्णवों की सगुण से हटकर योग प्रधान शाखा है – तपसी शाखा
249. गंभीर भक्त के साथ–साथ ज्योतिष को तुलसी ने 'रामाज्ञा प्रश्न' के माध्यम से प्रकट किया
250. रामचरित मानस व विनयपत्रिका के बाद तुलसी की तीसरी सर्वप्रसिद्ध रचना – कवितावली
251. तुलसी की अन्तिम रचना हनुमान बाहुक को माना जाता है (अप्रमाणिक है)
252. 'काहै न कानि करौ तुलसी कलिकाल विहाल कियौ है..... ' कवितावली की पंक्ति हे
253. रामचरितमानस के प्रथम टीकार – रामचरणदास
254. सर्वाधिक टीकाऍ रामचरित मानस पर लिखि गई है , द्वितीय ग्रंथ बिहारी सतसई है।
255. मध्ययुगीन रामकाव्य परंपरा के अन्तिम उल्लेखनीय कवि – महाराजा विश्वनाथ सिंह
256. रामानंद ने अपनी गुरू परंपरा का उल्लेख ''श्रीरातार्चन पद्धति'' में किया है।
257. 'गोरख जगायो जोग , भक्ति भगायो भोग'..... – तुलसीदास ने कहा
258. श्राम को रू॰ निहारति जानकी , कंगन के नग की.....कवितावली
259. 'मातु पितहि जग जाई तज्यौ ,विधिहु न लिख्यौ कछु भाल भलाई...' – कवितावली
260. 'यदि इस्लाम न भी आया होता तो भी 'भक्ति' साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है' –हजारी प्रसाद द्विवेदी
261. कवित्त विवेक एक नहि मोरे..... – तुलसी
262. 'कहे बिनु रह्यौ न परत,कहे राम! रस न परत' – विनयपत्रिका
263. तुलसी की भक्ति का स्वरूप विनयपत्रिका में वर्णित है।

MANAV SHARMA

264. 'कलि कुटिल जीव तुलसी भए वाल्मिकी अवतार धरि....' – नाभादास
265. 'वेद धर्म दूरि गये ,भूमि चोर भूप भये'..... – तुलसीदास
266. तुलसी की कृष्ण गीतावली में भ्रमरगीत का प्रसंग आता है।
267. रीतीकाल के पतन का प्रमुख कारण लोकमंगल की भावना का अभाव था
268. कवि पद्माकर को 'कविराज शिरोमणि' भी कहा जाता है।
269. आचार्य शुक्ल ने घनानंद को 'लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोग वैचित्र्य का कवि ' कहा।
270. कविवर देव का पहला ग्रंथ है – भावविलास
271. रीतिकालीन कवियो का प्रमुख छंद – सवैया
272. छंद निरूपक गंथो में केशवादास कृत 'छंदमाला' प्राचीनतम ग्रंथ है।
273. विहारी सतसई पर हिन्दी में रामचरित मानस के बाद सर्वाधिक टीकाएँ लिखी गई ।
274. बिहारी सतसई के प्रथम टीकाकार कवि – कृष्ण कवि
275. बिहारी के दोहो पर सवैया लिखने वाले कवि – कृष्ण कवि
276. बिहारी सतसई पर अमरूक शतक ,गाथा सप्तशती व आर्या सप्तशती का प्रभाव है।
277. बिहारी सतसई पर लाल चंद्रिका(लल्लूलाल) , अतरचंद्रिका(सुरति मिश्र), हरिप्रकाश टीका(हरिचरणदास) , बिहारी रत्नाकर(जगन्नाथ दास रत्नाकर)
278. हिन्दी में सतसई परंपरा का आरंभ कृपाराम कृत हिततरंगिणी से माना जाता है
279. मिश्रबंधुओं ने बिहारी को कवि ही नही माना
280. मिश्रबंधुओ ने एक बहस को जन्म दिया – ''देव बड़े या बिहारी''
281. आनंद लाल जोशी ने बिहारी सतसई पर फारसी में टीका लिखी
282. रीतीकाल का पंत – सेनापति (इनके ग्रंथ – 'कवित्त रत्नाकर' में ऋतु वर्णन है।)
283. काव्यांग निरूपण में भिखारीदास सर्वप्रमुख है।
284. रीतिकालीन लक्षण ग्रंथों की काव्य परंपरा में अंतिम चरण के प्रसिद्ध कवि – पद्माकर
285. पद्माकर कृत 'जगद्विनोद' को ''श्रंगार रस का सार ग्रंथ'' कहा जाता है।
286. पद्माकर की अंतिम रचना – गंगालहरी
287. सतसई लिखने वालो में प्रमुख नाम है – बिहारी , मतिराम ,वृन्द
288. 'व्यंग्यार्थ कौमुदी' जयपुर नरेश प्रतापसाहि की रचना है।
289. रीति ग्रंथकारो को डॉ. नगेन्द्र ने 'कवि –शिक्षक आचार्य' कहा है।
290. ''भाषा के लक्षक व व्यंजक बल की सीमा कहॉ तक है ,इसकी पूरी परख **<u>इन्हीं</u>** को थी'' – आचार्य शुक्ल, **घनानंद** के प्रति
291. केशव की संवाद योजना को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।
292. 'सिन्धु तर्‌यौ उनको बनरा,तुम पै धनुरेख गई न तरी..' – केशवदास
293. 'तुलसी गंग दुहु भये सुकविन के सरदार..' – भिखारीदास द्वारा दोनो की प्रशंसा
294. रीतिकाल में रचित अधिकांश काव्य 'मुक्तक' है।
295. स्वानभूत व स्वच्छंद प्रेम , घनानंद की विशेषता है।
296. कुन्दन को रंग फीकौ लगै , झलकै अति अंगनि चारू गोराई..... – मतिराम
297. 'ढ़ेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच , लोगन कवित्त कर खेल करि जान्यौ है...' – ठाकुर
298. 'जान मिलै तो जहान मिलै ,नहि जान मिलै तो जहान कहॉ कौ.....' – बोधा
299. सुजान चरित , सूदन की रचना है , जिसमें सूरजमल की वीरता का वर्णन है।
300. 'पौन मया करि घूंघट टरै ,दया करि दामिनी दीप दिखावै.....' – नागरीदास
301. कवि रसनिधि का वास्तविक नाम 'प्रथ्वीसिंह' था

MANAV SHARMA

302. घनानंद को अमर कर देने वाली रचना – 'सुजानसागर'
303. 'लोग है लागि कवित्त बनाबत , माहि तो मेरे कवित्त बनावत'..... – घनानंद
304. वृत्त कौमुदी(छंदसार) , मतिराम की रचना हैं
305. रीतिकालीन कवियों का छंद निरूपण 'वृत्त रत्नाकर ' से प्रभावित है।
306. अलंकार चन्द्रोदय , रसिक सुमति की रचना हैं
307. 'वरवधु विनोद' कलिदास त्रिवेदी की रचना है। (नायिकाभेद निरूपण ग्रंथ)
308. मतिराम की रसराज नामक रचना में श्रंगार रस व नायक–नायिका भेद का वर्णन है।
309. 'नवरसतरंग' बेणीप्रवीन की रचना है।
310. निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित रीतीकालीन कवि –
रसिक गोविन्द(नायिकाभेद वाली रचना–गोविन्दानंदघन)
311. 'कोउ कितेक उपाय करौ ,कहुँ होत है आपने पिया परायै.....' – मतिराम
312. हिन्दी साहित्य का प्रवेश युग – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
313. राधा सुधा निधि , श्री हरि की रचना है।
314. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बिहारी सतसई को 'रसिक ह्रदय का हार' कहा था
315. आनंद रघुनंदन (नाटक), रीवा के महाराज विश्वनाथ सिंह की रचना है,
316. शुक्ल ने इन्हें कहा– हिन्दी का प्रथम नाटककार
317. 'वावरि जौ पै कलंक लग्यौ ,तो निसंक है क्यों नहीं अंक लगावत'.... – नेवाज
318. रस रहस्य , को शुक्ल ने मम्मट के काव्यप्रकाश का छायानुवाद कहा है।
319. 'द्वै वनमाल हिय लगिए अरू है मुरली अधरा रस पीजै.... ' – मतिराम
320. कवि नृपशम्भु , महाराज शिवाजी का पुत्र था
321. भाषा–भूषण में कुल 262 दोहे है।
322. मतिराम का ग्रंथ 'ललित ललाम' को अप्पय दीक्षित के संस्कृत ग्रंथ 'कुवलयानंद' से प्रभावित माना जाता है।
323. महाभारत का दोहा–चौपाई शैली में अनुवाद – सबल सिंह ने किया
324. महाभारत का हिन्दी पद्यानुवाद – गोकुलनाथ गोपीनाथ ने किया
325. 'भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था वैसा और किसी कवि का नहीं'
(– शुक्ल,घनानंद के प्रति)
326. शुक्ल ने बेनीप्रवीन को मतिराम के समकक्ष बताया
327. 'मेरे कर मैंहदी लगी है नंदलाल प्यारै ,लट उरझि है नक बेसरि सँभारि दे – मतिराम.
328. बिहारी के दोहे रस के छोटे–छोटे छींटे है..... (– शुक्ल)
329. मरे बैल गरियार मरै वह अड़ियल टट्टू..... – बेताल कवि
330. दीनदयाल गिरी से भारतेन्दु के पिता गिरधरदास का बड़ा स्नेह था।
331. रीतिकाल की काव्यभाषा अवधी थी पर राजभाषा अवधि थी
332. 'ज्यौं–ज्यौं निहारिये मेरे नैनन ,त्यौं–त्यौं खरी निकरै सी निकाई..... ' – मतिराम
333. रीतिकाल नाम का उल्लेख शुक्ल से पूर्व ग्रियर्सन ने किया था
334. सभी नौ रसों के निरूपक आचार्य – आचार्य पद्माकर
335. शिवाजी की प्रशस्ति और ओजपूर्ण वाणी प्रस्फुटन वाली भूषण की रचना – शिवा बाबनी
336. ' इन्द्र जिमि जम्भ पर ,बाड़व सुअम्भ पर रावन सदंभ पर रघुकुल राज है ' – भूषण
337. शुक्ल ने कवि भूषण की आलोचना की है।
338. बिहारी सतसई एक लक्ष्य ग्रंथ है।
339. 'कारी कूर कोकिला काहै को बैर काढ़ति री..... – घनानंद

MANAV SHARMA

340. 'बिहारी की वाग्विभूति' की रचना विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने की है।
341. 'ऑखिन मूंदिवै के मिस आनि अचानक पीठी उरोज लगावै.....' – मतिराम
342. हिन्दी साहित्य का प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ – कविप्रिया (केशवदास)
343. 'वेद में बखानी तीन लोकन की ठकुरानी...' – सेनापति
344. नेही ,महा ब्रजभाषा प्रवीन और सुंदरताहु के भेद कौ जाने..... – ब्रजनाथ
345. 'गुरू कह्यौ राम भजन नीकौ , मोहि लागत राज डगरौ सो.... – ब्रजनाथ
346. पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी की कविता को ''शक्कर की रोटी'' कहा है।
347. 'बिहारी सतसई' की भूमिका , पद्मसिंह शर्मा ने लिखी।
348. ' ब्रजभाषा व्याकरण ' के रचियता मिर्जा खॉ है।
349. रीतिकाल को 'ललित कलाओं का स्वर्णयुग' कहा जाता है।
350. 'काव्य कल्पतरू' (चिन्तामणि कृत) में काव्य के 10 गुण माने गये है।
351. 'बिहारी की रस व्यंजना व अनुभाव प्रशंसनीय है।' – शुक्ल
352. कवित्त रत्नाकर , सेनापति की रामभक्ति की रचना है।
353. श्रंगार ,भक्ति व वैराग्य सम्बन्धी शतक – भतृहरि की रचना है।
354. ग्रियर्सन ने रीतीकाल को रीतीकाव्य कहा है।
355. 'बोधा रसोन्मत्त कवि है....' – शुक्ल के अनुसार
356. 'सीख लीनौ मीन मृग खंजन कमल नैन..... ' – ठाकुर
357. 'सनेह सागर' के रचियता हंसराज बख्शी है।
358. आधुनिक काल में 'घनानंद ग्रंथावली ' का सम्पादन रामवृक्ष बैनीपुरी ने किया।
359. कृष्ण बिहारी मिश्र(एक मिश्रबन्धु) , ने देव को बिहारी से श्रेष्ठ माना है।
360. कृष्ण बिहारी मिश्र ने 'मतिराम ग्रथावली' लिखी
361. देव की प्रथम रचना – भाव विलास
362. ' रामचन्द्रिका ' में कुल 39 सर्ग(प्रकाश) है।
363. शुक्ल ने द्विजदेव को 'रीतिकालीन अंतिम श्रंगारी कवि' कहा है।
364. राधाकृष्णदास ने 'कविवर बिहारी लाल' नामक रचना लिखी
365. 'दारा की न दौर यह, रार नहीं खजुबै की , बॉधवौ नहि है कैधौं ,मीर सहवाल की.....' – भूषण
366. दक्षिण भारत में खड़ी बोली में साहित्य सृजन करने वाले विद्वान – मुल्ला वजही
367. ब्रजभाषा गद्य का सबसे प्राचीन नमूना 'गोरखसार'(14 वीं सदी) नामक ग्रंथ में है।
368. आरंभिक खड़ी बोली लेखको में 'सदासुखलाल नियाजी' का गद्य सर्वाधिक व्यवस्थित व व्यवहारोपयोगी है।
369. ' नसिकेतोपाख्यान ' का अन्य नाम चंद्रावली है। यह सदल मिश्र की रचना हैं
370. राजा मोहन राय को 'नवजागरण का अग्रदूत' माना गया है ,इन्हें 'भारतीय कोलम्बस' की उपाधि मिली।
371. दयानंद सरस्वती ने हिंदी को 'आर्यभाषा' कहा था
372. गार्सा–दा–तासी , हिंदी के विरोधी थे , सर सैयद अहमद खॉ ने हिन्दी को गॅवारू बोली कहकर उर्दू के पक्ष में हिमाकत की थी।
373. राजा लक्ष्मण सिंह ने उर्दू को मुसलमानों की भाषा कहा।
374. शिवप्रसाद सितारेहिन्द उर्दू समर्थक थे
375. पंजाब में हिंदी का प्रसार वहॉ के संस्कृत विद्वान श्रद्धाराम फुल्लौरी व नवीन चन्द्र राय ने किया

MANAV SHARMA

376. मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में 'सितारेहिन्द' का प्रभाव है
377. भारतेन्दु का सबसे महत्वपूर्ण नाटक 'अँधेर नगरी' है,
(सत्ता की विवेकहीनता का प्रदर्शन)
378. भारतेन्दु की राजभक्ति परक कविता – भारत शिक्षा
379. भारतेन्दु की कविता 'प्रबोधिनी' का बिषय है – विदैशी वस्तु बहिष्कार
380. भारतेन्दु रचित खड़ी बोली की कविताएँ – 'फूलों का गुच्छा' नामक काव्यगंथ में
381. 'साहित्य जनसमूह के ह्रदय का विकास है.....' – बालकृष्ण भट्ट
382. काव्य में खड़ी बोली के पक्ष में आंदोलन चलाने वाले विद्वान
– अयोध्याप्रसाद खत्री (1888 ई.)
383. भारतेन्दु की कविता 'दशरथ विलाप'खड़ी बोली में है।
384. भारतेन्दु ने देशी राजाओं को रासभ(गधा) कहा है।
385. भारतेन्दु युग में 'बंगवासी पत्र' को भाषा गढ़ने की टकसाल कहा गया।
386. भारतेन्दु द्वारा रचित निबन्ध 'नाटक' को हिन्दी आलोचना की आधारशिला कहा गया है।
387. जगन्नाथ रत्नाकर ने खड़ी बोली के समर्थको को हठी और मूर्ख कहा
388. 'सरस्वती ' पत्रिका को 'बीसवीं शताब्दी के आरंभिक चरण का विश्वकोष' कहा है।
389. बोलचाल व मुहावरेदार भाषा प्रयोग 'चुभते चौपदे' और 'चौखे–चौपदे' में है।
390. प्रियप्रवास को पहले हरिऔघ ने 'ब्रजांगना विलाप'नाम से लिखा । यह ग्रंथ राधा–कृष्ण प्रेम का वर्णन है।
391. आचार्य शुक्ल ने मैथिलीशरण गुप्त को 'साम्राज्यवादी कविता '' है।
392. गुप्त का प्रिय छंद 'हरिगीतिका' है।
393. गुप्त की आरंभिक रचनाएँ 'वैश्यापकारक' पत्र कलकत्ता में छापी थी
394. अमृतलाल नागर कृत उपन्यास 'मानस का हंस' में 31 खंड है।
395. डॉ.नगेन्द्र ने ' रामचरितमानस ' के बाद हिंदी में रामकाव्य का दूसरा स्तम्भ 'साकेत' माना है।
396. बालकृष्ण नवीन , दिनकर ,चतुर्वेदी को ''ओजत्रयी कवि'' मानते है।
397. मैथिलीशरण गुप्त की प्रथम रचना – हेमन्त (1905 में सरस्वती में छपी)
398. रवीन्द्रनाथ टैगोर का 'काव्येर उपेक्षिता'नामक लेख 'साकेत' महाकाव्य के सृजन का प्रेरणास्त्रोत है।
399. 'मेघनाद वध' गुप्त की अतुकांत रचना है।
400. 'पंचवटी' में लक्ष्मण के चरित्र का उत्कर्ष वर्णन है ,इसमें प्रकृति सौन्दर्य शानदार है।
401. गुप्त के ' अर्जन और विसर्जन ' में मुस्लिम संस्कृति की झॉकी है।
402. गुप्त के 19 खण्डकाव्य व 2 महाकाव्य (साकेत व जयभारत)है।
403. 'जयद्रथवध ' में ऐसे युवक का चित्रण हुआ है ,जो राष्ट्र की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग हेतु उद्धत है।
404. गुप्त के 'विकट भट' में जोधपुर के एक राजपूत सरदार की 3 पीढ़ियों तक चलने वाली कथा है , जिसमें वचन निभाने का वर्णन है।
405. श्रीधर पाठक ,आधुनिक खड़ी बोली के प्रथम कवि है , इनकी खड़ी बोली की रचना 'गुणवंत हेमंत'है।
406. जगन्नाथ दास रत्नाकर को 'भक्तिकालीन आत्मा और रीतिकालीन कलात्मकता का समन्वयक ' कहा जाता है।
407. पद्मसिंह शर्मा ने खड़ी बोली कविता को 'नीरस व कर्णकटु ' कहा है।

MANAV SHARMA

408. बालमुकुन्द गुप्त को भारतेन्दु व द्विवेदी के योजक रचनाकार है।
409. जगन्नाथदास रत्नाकर के आदर्श कवि 'बिहारी' है।
410. अनूप शर्मा को 'आधुनिक भूषण'कहा जाता है।
411. दिनकर को '' राष्ट्रीय व भारतीय संस्कृति '' का कवि कहा जाता है।
412. दिनकर को 'अधैर्य का कवि'कहा जाता है।
413. भाषा योग वशिष्ठ , के लेखक रामप्रसाद निरंजनी थे। (18 वीं सदी)
414. भारतेन्दु , सर सैयद अहमद खॉ की भाषा नीती के विरोधी थे।
415. शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने 'मानवधर्मसार'नामक रचना लिखी
416. राजा लक्ष्मण सिंह ने कहा – हमारे मत में हिन्दी और उर्दू दोनो बोलियॉ न्यारी–न्यारी है।
417. फ्रेडरिक पिन्काट , हिन्दी के समर्थक थे
418. प्रतापनारायण मिश्र ने नाटको में अभिनय करने हेतु अपने पिता से मूंछ मुंडवा लेने की आज्ञा मॉगी थी
419. 'नवभक्तमाल'की रचना राधाचरण गोस्वामी ने की
420. 'तरनि तनुजा तट तमाल तरूवर बहु छाए' पंक्ति भारतेन्दु हरिश्चंद्र की है।
421. नवीन चतुर्वेदी , जगन्नाथ दास रत्नाकर के काव्यगुरू थे
422. 'भारत बारहमासा' राधाकृष्णदास ने लिखी
423. 'लोकोक्ति शतक'प्रतापनारायण मिश्र की रचना है।
424. बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'(भारतेन्दु मंडल सदस्य)ने पत्रिका , ''नागरी नीरद'' साप्ताहिक पत्रिका निकाली।
425. डॉ. रामविलास शर्मा ने ' हिन्दी नवजागरण'को 'हिन्दू जाति का नवजागरण ' कहा है।
426. 'सुकवि सतसई' व 'कंसवध ' अंबिकादत्त व्यास की रचना है।
427. 'धन्य भारत भूमि सब रतनन उपजावनि'..... पंक्ति राधाकृष्णदास की है।
428. रसवन्ती , दिनकर की रचना है।
429. 'इतिहासहंता कथा' धर्मवीर भारती की रचना हैं
430. 'निसार'उपनाम मुंशी सदासुखलाल नियाजी का था , जबकि बद्रीनारायण चौधरी का उपनाम 'अभ्र' था।
431. नाथूराम शर्मा 'शंकर' को भारतेन्दु–प्रज्ञेन्दु नामक उपाधि मिली।
432. गुप्त को 'भारत–भारती'(1912) पर राष्ट्रकवि का दर्जा मिला
433. शुक्ल ने 'एकांतवासी योगी'को खड़ी बोली की प्रथम रचना कहा है।
434. सियाराम शरण गुप्त ने 'नकुल' नामक महाकाव्य लिखा।
435. 'नागरी तेरी यह दशा.....' महावीर प्रसाद द्विवेदी की रचना है।
436. 'अधिकार खोकर बैठे रहना ,यह महादुष्कर्म है.. – भारत–भारती (1912 ई. में गुप्त द्वारा)
437. गुप्त के रहस्यवादी गीत 'झंकार' कृति में है।
438. 'चातक खड़ा चोंच खोले है,संपुट खोले सीप खड़ी.....' पंक्ति के रचियता गुप्त है। (कुणाल गीत भी ,गुप्त का)
439. 'वेणु ले गूंजे धरा.....' माखनलाल चतुर्वेदी की रचना है।
440. 'बड़ी धूम से टेसू आए , लड़के लाड़ी साथ लगाये...' पंक्ति बालमुकुन्द गुप्त की है।
441. 'सारे देववृंद से खिंचकर देवराज के नयन हजार.....' – महावीर प्रसाद द्विवेदी
442. 'जगत है सच्चा तनिक न कच्चा, समझो बच्चा इसका भेद....' – श्रीधर पाठक
443. 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी.....' – यशोधरा (गुप्त)

MANAV SHARMA

444. माइकल मधुसूदन दत्त की कृतियों का अनुवाद गुप्त ने 'मधुप'नाम से किया।
445. 'धरती हिलाकर नींद भगा दे , वज्रनाद से व्योम जगा दे.....' – नाथूराम शर्मा'शंकर'
446. सुमन , रचना महावीर प्रसाद द्विवेदी की है।
447. कृषक क्रंदन , गयाप्रसाद शुक्ल की रचना है।
448. 'सिंह पुरूष सत्पुरूष वचन ,कदली फरै एक बार त्रिया तेल हम्मीर हठ ,चढ़ै न दूजी बार' (हम्मीर हठ)
449. प्रकृति चित्रण के क्षेत्र में वह द्विवेदीयुगीन कवि जो सहज ही रीतिकालीन कवि सेनापति का स्मरण करा देता है – राय देवीप्रसाद पूर्ण
450. द्विवेदी युगीन कवियो में 'सतसई' की रचना वियोगी हरी ने की थी
451. 'त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है , करौ प्रेम पर प्राण निछावर .....' –रामनरेश त्रिपाठी
452. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने छायावाद के समर्थन में लेख 'भारत'नामक पत्रिका में प्रकाशित करवाये थे।
453. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'छायावाद' को 'चित्रभाषा शैली'कहा है।
454. 'उर्वशी' को कामायनी की श्रद्धा का पूर्व संस्करण माना जाता है।
455. कामायनी का उद्देश्य 'आनंदवाद' की स्थापना है।
456. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने कामायनी को 'मानवता का रसात्मक इतिहास' कहा है।
457. पंत कृत 'पल्लव' को प्रकृति की चित्रशाला कहा गया हैं।
458. 'दीया'महादेवी वर्मा की खड़ी बोली की प्रथम बोली की कविता है।
459. 'सांध्यगीत'महादेवी वर्मा के गीतों में मधुर वेदना की मर्माभिव्यक्ति है।
460. हरिवंशराय बच्चन को क्षयी रोमांस का कवि कहा जाता है।
461. 'होगा फिर से दुधर्ष समर ,जड़ से चेतन का निसी वासर...
– निराला कृत , तुलसीदास रचना से
462. छायावाद को शुक्ल ने मधुचर्या कहा है।
463. छायावाद का घोर समर्थक पत्र है – 'जागरण'
464. निराला के प्रिय कवि तुलसीदास व आध्यात्मिक गुरू विवेकानंद माने जाते है।
465. डॉ. नगेन्द्र ने कामायनी को 'मानव चेतना के विकास का महाकाव्य' माना है।
466. नित्यानंद , हरियाणवी संत थे
467. जयशंकर प्रसाद को 'झारखंडी कवि' कहा जाता है।
468. ''काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है।'' – प्रसाद
469. शुक्ल ने छायावाद को 'अभिव्यंजनावाद का विलायती संस्करण'कहा है।
470. महादेवी वर्मा को 'छायावाद की शक्ति' कहा जाता है।
471. 'मुक्त करो नारी को मानव ,चिर वन्दिनी नारी को.....' – युगवाणी (पंत)
472. 'हम दीवानों की क्या हस्ती , है आज यहॉ कल वहॉ चले.....' – भगवतीचरण वर्मा
473. 'ह्रदय ही तुम्हें दान क्या कहा ,क्षुद्र था उसने गर्व किया...' – जयशंकर प्रसाद
474. प्रसाद की खड़ी बोली की कविताओं का प्रथम काव्य संग्रह – कानन कुसुम
475. 'है अमा निशा उगलता गगन घन अंधकार..... ' – राम की शक्तिपूजा (निराला)
476. 'चंचला स्नान कर आवे ,चन्द्रिका पर्व में जैसी.....' – ऑसू (प्रसाद)
477. सुखदुख का भावमयी चित्रण , महादेवी वर्मा ने किया।
478. ''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नही है ,बल्कि रूढ़िवादी ,सामंतवादी, साम्राज्यवादी बंधनों के प्रति विद्रोह है। – रामविलास शर्मा ''
479. 'मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान ही

MANAV SHARMA

छायावाद है। –नंददुलारे वाजपेयी'

480. सहज कविता 1968 से है , इसे 'लय'पत्रिका में निर्देशायामी कविता कहा है।

481. स्मकालीन कविता 1975 के बाद की कविताओं को कहा जाता है।

482. रामेश्वर शुक्ल की रचना है – अपराजिता ,मधुलिका , किरण बेला ,लाल चूनर

483. नरेन्द्र शर्मा की रचनाएँ –प्रभात फेरी ,द्रौपदी ,रक्त चंदन ,बर्षा का बादल, पलाशवन,मिट्टी और फूल,प्यासा निर्झर

484. रचनाओं का सही क्रम है
– जूही की कली – सरोज स्मृति –अनामिका – राम की शक्तिपूजा।

485. सही क्रम है – प्रसाद – निराला – पंत – महादेवी वर्मा

486. 'अपनी व्यक्त अपूर्णता को अव्यक्त पूर्णता में मिटा देने की इच्छा ही रहस्यवाद है
– महादेवी वर्मा

487. 'छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच जीवन का उद्‌गीथ है ...'उसका दर्शन सर्वात्मवाद है।
– महादेवी वर्मा

488. 'वेदना के आधार पर स्वानुभूति अभिव्यक्ति ही छायावाद है , पंक्ति प्रसाद की है ।
– महादेवी वर्मा

489. छायावाद के दो अर्थ है – एक रहस्यवाद रूप में और दूसरा काव्यशैली रूप में ....
– आचार्य शुक्ल

490. '' छायावाद के मूल में पाश्चात्य रहस्य भावना थी , इस श्रेणी की मूल प्रेरणा अंग्रेजी की रोमाटिक भावधारा की कविता की प्राप्ति से हुई '' – हजारी प्रसाद द्विवेदी का

491. 'प्रेमपथिक' की रचना पहले प्रसाद द्वारा ब्रजभाषा में हुई , जिसे बाद में खड़ी बोली में रूपान्तरित किया

492. निराला की साहित्य साधना , रामविलास शर्मा की रचना है।

493. दिनकर को उर्वशी पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला

494. पंत की पल्लव में भाषा,अलंकार ,छंद संबंधी भूमिका है।

495. निराला को 'औज और आदित्य का कवि' कहा जाता है।

496. छायावाद अंग्रेजी के 'फैन्टमेस्टा' शब्द से जुड़ा है।

497. 'भावी पत्नि के प्रति' पंत की रचना है।

498. प्रसाद की श्रेष्ठ आख्यानक कविताएँ 'लहर' में संग्रहित है।

499. 'माया दर्पण' श्रीकांत की कविता है ,पटकथा धूमिल की रचना है ,विस्मृत आवाज असद जैदी की रचना है।

500. निराला की तुलसीदास कृति में रत्नावली द्वारा तुलसी को कहे गये अपशब्द व तत्पश्चात आत्मोन्नयन का वर्णन है

501. डॉ. नगेन्द्र ने छायावाद की सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक आलोचना की है

502. पंत का प्रिय छंद – रोला

503. प्रभाकर माचवे ने माखनलाल चतुर्वेदी को प्रथम छायावादी कवि कहा है

504. कामायनी को चेतना व्यक्तिवादी है।

505. पल्लव और वीणा पर तीखा व्यंग्य , पद्मसिंह शर्मा ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन मुजफ्फरनगर में किया।

506. पल्लव में 'लाक्षणिक साहस'दर्शनीय है

507. पल्लव में पंत ने रीतीकालीन काव्य की आलोचना की है।

508. 'छंद बंद ध्रुव तोड़ फोड़ कर पर्वत कारा'..... – पंत

MANAV SHARMA

509. पंत का दार्शनिक मत 'सर्वहितवादवाद' था ।
510. 'अमृत और विष ' के रचनाकार अमृतलाल नागर है।
511. डॉ. बच्चन सिंह ने छायावाद की जगह 'स्वच्छंदतावाद' शब्द का प्रयोग अधिक सार्थक माना है।
512. छायावाद वस्तुतः कई काव्यकृतियों का सामूहिक नाम है – डॉ. नामवर सिंह
513. कामायनी में 'वासना' के बाद 'लज्जा'सर्ग आता है।
514. 'बीती विभावरी जाग री.....' गीत 'लहर' में है।
515. प्रेम और सौन्दर्य की मधुर स्मृतियों की पीड़ा का मर्मस्पर्शी चित्रण 'ऑसू'में हुआ है।
516. कामायनी के चिंता सर्ग का कुछ अंश, अक्टूबर 1928 में 'सुधा' पत्रिका में छपा था ।
517. युग प्रवर्तक कवि –निराला
518. सरोज स्मृति , राम की शक्तिपूजा की पूरक कृति है ।
519. गुंजन , पंत की अंतिम छायावादी कृति है।
520. हालावाद , 1933–36 ई. का काल है
521. अपनी शताब्दी के नाम , दूधनाथ सिंह की कविता है
522. शब्द , त्रिलोचन की रचना है , जबकि मुक्तिप्रसंग , राजकमल चौधरी की रचना है
523. निराला की प्रगतिवादी कविता 'कुकुरमुत्ता' में धनवानों की निंदा व सर्वहारा वर्ग की प्रशंसा की गई है।
524. युगान्त (पंत) को छायावाद का अंत व प्रगतिवाद का उदय माना जाता है।
525. उच्छ्वास (पंत) की काव्यात्मक समीक्षा शिवाधार पाण्डेय ने की।
526. रूपाभ , में पंत के साथ नरेन्द्र शर्मा भी है।
527. गॉधी और मार्क्स , का प्रभाव पंत की युगवाणी में है।
528. 'कला संसार को बदलने के लिए' का नारा भारतीय प्रगतिशील साहित्य ने दिया।
529. प्रथम तारसप्तक में अज्ञेय के अतिरिक्त शेष 6 कवि , प्रगतिवादी रह चुके है।
530. नागार्जुन को व्यंग्यपरक कविताओं का कुशल शिल्पी माना जाता है।
531. शिवमंगल सिंह सुमन की रचना 'हिल्लोल'में प्रणयानुभूति के चित्र है।
532. रामेश्वर शुक्ल अंचल को हिन्दी काव्य साहित्य में 'मांसलवाद का प्रवर्तक'माना गया है।
533. प्रगतिवाद के आदि प्रवर्तक – कार्ल मार्क्स
534. पंत ने युगवाणी में प्रगतिवाद को युग की वाणी कहा है।
535. नागार्जुन का अंधाविश्वासवश नाम 'ढ़क्कन' रखा गया था।
536. शमशेर बहादुर सिंह ने मुक्तिबोध की 'ॲधेरे में ' कविता को 'आधुनिकजन इतिहास का दहकता इस्पाती दस्तावेज' कहा गया है।
537. नयी कविता का केन्द्र बिन्दु है – लोकजीवन की अभिव्यक्ति
538. नयी कविता में लघु मानव से तात्पर्य है – व्यक्ति
(सामान्य जन जो आज तक उपेक्षित रहा है।)
539. नए कवि के प्रति , अज्ञेय की रचना है
540. विन्ध्य हिमालय , शिवमंगल सिंह सुमन की रचना है।
541. वे और तुम , नागार्जुन की रचना है।
542. प्रयोगवाद को प्रतीकवाद भी कहा जाता है।
543. प्रगतिशील कवि शमशेर बहादुर सिंह को फांसिसी प्रभाव के कारण 'कवियों का कवि' कहा जाता है।
544. शलभ श्री रामसिंह ,'युयुत्सावादी कविता के जनक है।

MANAV SHARMA

545. 'प्रतिबद्ध कविता के जनक है – परमानंद श्रीवास्तव
546. प्रगतिशील लेखको में प्रेमचंद अग्रणी है।
547. 'मॉझी न बजाओं बंशी' केदारनाथ अग्रवाल की कविता है। (अन्य – बसंती हवा)
548. मरो,मारो,मारो हॅसिया , हिंसा और अहिसा क्या है.....? – केदारनाथ अग्रवाल
549. रामविलास शर्मा 'हंस' के सम्पादक रहे व प्रगतिशील लेखक संघ के मंत्री भी रहे।
550. नागार्जुन ने इंदिरा गॉधी के विरोध में कविता लिखी थी
551. लंदन में गठित भारतीय लेखक संघ का नेतृत्व नागार्जुन व केदारनाथ अग्रवाल ने किया।
552. पंत को प्रगतिवाद का प्रवर्तक माना जा सकता है।
553. शिवदान सिंह चौहान का लेख 'भारत में प्रगतिशील की आवश्यकता ' लेख 'विशाल भारत'में छपा था।
554. 'जीवन के गान'शिवमंगल सुमन की रचना है।
555. 'भस्मांकुर' , 'तुमने कहा था' नागार्जुन के काव्य संग्रह है।
556. 'ऑगन के पार द्वार'(अज्ञेय) के 3 खंड है।
557. प्रयोगवाद को अस्तित्ववाद ने सर्वाधिक प्रभावित किया (ज्यॉ पाल सात्र –अस्तित्ववाद)
558. आधुनिक संवेदना का सूत्रपात – तारसप्तकों से माना जाता है।
559. अज्ञेय की प्रसिद्ध कविताऍ – कलगी बाजरे की , सत्य और शब्द , जितना तुम्हारा सच है ,सावन मेघ
560. 'अभी बिल्कुल अभी' (केदारनाथ सिंह) व 'नीम रोशनी में (कुँवर नारायण)' की कविता है।
561. ''अच्छी भाषा की अच्छाई इसी में है कि वह भाषा और अनुभूति के अद्वैत को स्थापित करे।'' – अज्ञेय
562. 'प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं , वरन वह साधन है' – अज्ञेय
563. सॉप , अज्ञेय की व्यंग्यपरक कविता है।
564. बुल 4 तारसप्तक प्रकाशित हुए , प्रथम 3 का सम्पादक अज्ञेय ही था ।
565. अज्ञेय ने प्रथम तारसप्तक को ही तारसप्तक नाम दिया ।
566. 'मै प्रयोगवाद का अगुवा नहीं पिछलगुवा हूॅ .' – रामधारी सिंह दिनकर
567. लोक कल्याण की उपेक्षा , प्रयोगवाद का सबसे बड़ा दोष था ।
568. मछलीघर , साखी , अलविदा आदि विजयदेवनारायण साही की रचनाऍ है।
569. 'लघु मानवतावाद की महत्ता' विजयदेव नारायण साही ने की थी ।
570. पश्चिम में प्रयोगवादी आन्दोलन 'न्यू सिग्नेचर'के पुरोधा टी.एस.इलियट थे।
571. प्रयोगवाद , द्वितीय तारसप्तक के साथ ही 'नयी कविता' में परिवर्तित हो गया।
572. धर्मवीर भारती में 'रोमांटिक भावप्रवणता' अधिक है। इनकी 'कनुप्रिया' रचना में प्रणय चित्रित है।
573. 'काल तुझसे है होड़ मेरी' , बात बोलेगी हम नही ,मन के राग ,चुका भी नहीं हूॅ मै। **,मै वक्त के सामने हूॅ** ,कुछ और कविताऍ आदि शमशेर बहादुर सिंह की कविताऍ है।
574. मै वक्त के सामने हूॅ , समय देवता ,भीतरी नदी की यात्रा –गिरिजा माथुर
575. भारत भूषण अग्रवाल की कविताऍ –ओ अप्रस्तुत मन , छवि के बंधन ,उतना वह सूरज, अग्निलीक।
576. मुक्तिबोध को 'तीव्र इन्द्रिय बोध'का कवि कहा जाता है।

MANAV SHARMA

577. 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन प्रयाग से होता था।

578. 'शमशेर मूड्स के कवि है ,किसी विजन के नहीं' – मलयज नामक विद्वान ने कहा

579. ''पर एक तत्व है –बीज रूप स्थित मन साहस में , स्वतंत्रता में ,नूतन सृजन में.....''
– अंधायुग से

580. तारसप्तक के कवियों का सही क्रम :–
अज्ञेय –शमशेर–भवानीप्रसाद मिश्र–नरेश मेहता––धर्मवीर भारती–कुँवर नारायण–रघुवीर सहाय–केदानाथ अग्रवाल

581. डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने नयी कविता को बिम्ब विधान कहा है।

582. लक्ष्मीकांत वर्मा (ताजी कविता का प्रवर्तक)की कविता है – सिर पर जूता पैर में टोपी

583. रघुवीर सहाय ने राम मनोहर लोहिया के प्रति – ''मेरा प्रतिनिधी'' नाम से कविता लिखी।

584. अकविता का प्रवर्तक – जगदीश चतुर्वेदी ,

585. साठोत्तरी कविता का प्रवर्तक – सलिल गुप्त

586. सनातन सूर्योदयी कविता का सूत्रपात 1962 में 'भारती' पत्रिका के होली रंगोत्सव विशेषांक से हुआ।

587. ठाकुर प्रसाद सिंह ने गॉधी को 'महामानव गॉधी' चित्रित किया।

588. 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास ' पर रामस्वरूप चतुर्वेदी को व्यास सम्मान मिला।

589. सिद्ध सरहपा को सिद्ध साहित्य (सहजयान) का प्रवर्तक माना जाता है।

590. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – रासक – रासअ – रासा –रासो
(रासो शब्द की उत्पत्ति)

591. आदिकालीन ग्रंथा में प्राचीनतम ग्रंथ – कुवलयमाला (उद्योतन सूरी कृत)

592. भोलाशंकर व्यास ने हिन्दी के आरंभिक रूप को 'अवहट्ठ' कहा।

593. सूरदास की जीवनी पर आधारित अमृतलाल न्नर का उपन्यास – खंजन नयन

594. 'जहॉ गद्य खत्म होता है वहॉ कविता जन्म लेती है।' – गोपाल दास नीरज

595. गरीब शहरी लोगो का अंधविश्वास के खिलाफ संघर्ष का चित्रण वाला उपन्यास –
अमृत और विष (अमृत नागर)

596. जयशंकर प्रसाद ने किसी छंद विशेष पर कार्य नही किया

597. अज्ञेय ने 'सब रंग'नामक निबन्ध 'कुट्टीचातन' उपनाम से लिखा।

598. 'संस्कृति के चार अध्याय' (1956) , दिनकर की रचना है।

599. 'सिंहासन खली करो कि जनता आती है... ' कविता दिनकर ने 1956 के गणतंत्र दिवस पर सुनाई थी ,जिसको जयप्रकाश नारायण ने अपनी समग्र कांति की प्रथम पंक्ति बनाई थी।

600. निराला की गौरवशाली मूल्यों वाली रचना – 'परिमल'

601. फणीश्वर नाथ रेणु की पहली कविता – होली

602. लहरों से डर जाने से नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती..... सोहन लाल द्विवेदी , हरिवंश बच्चन इसे मंचों पर गाते थे।

603. अकहानी आन्दोलन से जुडे लेखक निम्न है –
दूधनाथ सिंह,रमेश वक्षी (निर्मल वर्मा तो 'नई कहानी' से था।)

MANAV SHARMA

604. हिन्दी का प्रथम गद्यकार – लल्लू लाल
605. हिन्दी का प्रथम संस्मरण – 'प्रतापनारायण मिश्र(बालमुकुन्द गुप्त कृत)'
606. रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'पथिक' में कुल 24 खंड है।
607. प्रेमवाटिका(1614 ई.) , रसखान की अंतिम कृति है।
608. आलवार भक्त 'नम्भलवार' को राम की पादुका का अवतार माना जाात है।
609. जगन्नाथदास रत्नाकर ने उर्दू में 'जकी' उपनाम से कविताएँ लिखी।
610. 'कलि कुटिल जीव विस्तार हित ,वाल्मिकी तुलसी भए..' – नाभादास
611. 'शेखर :एक जीवनी' नामक अज्ञेय के उपन्यास में सर्वप्रथम फ्लैशबैक पद्धति का प्रयोग किया गया।
612. 'प्रेमाश्रम' को गोदान की पूर्व पीठिका कहा जाता है।
613. अपभ्रंश में स्वरो की संख्या – 8
614. अवधि को कौशली या वैसवाड़ी भाषा भी कहा जाता है।
615. रमईकाका , अवधि के आधुनिक काल के कवि है।
616. हिन्दी को स्कूलों में प्रवेश दिलाने का श्रेय – शिवप्रसाद सितारेहिन्द को जाता है।
617. वैदिक संस्कृत में 14 स्वर व लौकिक संस्कृत में 12 स्वर होते है।
618. ब्रजभाषा को अंतर्वेदी भाषा भी कहा जाता है।
619. उर्दू का मूल अर्थ है –शाही शिविर या खेमा। (उर्दू नामकरण – 1740 में)
620. हिन्दुस्तानी को एंग्ला–इण्डियन या मूर्स भी कहा जाता हैं।
621. मार्कण्डेय ने अपभ्रंश के 3 भेद दिये है – नागर , उपनागर व ब्राचड़ अपभ्रंश
622. छायावादी कविता का घोषणा पत्र – अनामिका(निराला)
623. पहली गद्य आत्मकथा – एक कहानीः कुछ आपबीती,कुछ जगबीती।
624. नगरी लिपि का कचहरियों में प्रवेश – 1898 में
625. ख्वाजा बंदानेवाज कृत 'मिराजुल आशकीन' को' दक्षिणी हिन्दी गद्य की प्रथम कृति मानी जाती है।
626. 'जोशुआ केटलरे'नामक विदेशी विद्वान ने सर्वप्रथम हिन्दी व्याकरण लिखा।
627. हिन्दी कहानी साहित्य का मील का पत्थर (माइलस्टोन) – उसने कहा था (गुलेरी)
628. विशम्भर नाथ कौशिक ने 'बिजयानंद ' नाम से निबंध लिखे – दूबे जी की चिट्ठियॉ ,दुबे जी की डायरी
629. तुलसीदास की प्रथम पाठशाला का नाम – महात्मा (शेष सनातन महाराज काशी का आश्रम)
630. रहीम की ज्योतिष सम्बन्धी रचना – 'खेटुकौतुकमजातकम'
631. सत्यनारायण कविरत्न को ब्रजकोकिल कहा जाता है।
632. रामानुज के गुरू – कांचीपूर्ण महाराज
633. नामदेव , सगुण–निर्गुण सन्त थे।
634. 'मोहमुद्गार' के रचनाकार – शंकराचार्य
635. कड़वक शैली – चौपाई के साथ दोहा रखने की पद्धति
636. पाहुड दोहा में रामसिंह ने 222 दोहे लिखे।
637. हिन्दी में गद्य काव्य का श्रीगणेश कर्ता – राधाकृष्णदास
638. पाण्डेय बैचन शर्मा'उग्र' के साहित्य को बनारसी दास चतुर्वेदी ने 'घासलेटी साहित्य' कहा।
639. भारतेन्दु के काव्य गुरू – पं. लोकनाथ

MANAV SHARMA

640. नयी कविता ,सूक्ष्म के प्रति अति सूक्ष्म का विद्रोह है – रामविलास शर्मा

641. एक नही ,दो–दो मात्राएँ , नर से भारी नारी..... गुप्त , 'द्वापर' खण्डकाव्य में

642. मुझे प्रोफेसरों के बीच , छायावाद सिद्ध करना है – निराला

643. 'हो जाने दे गर्क नशे में ,मत पड़ने दे फर्क नशे में ..... ' – बालकृष्ण नवीन

644. महामानव , ठाकुर प्रसाद सिंह की रचना है।

645. पत्रिकाएँ व उनके संपादक – आधुनिक कविताएँ–रणधीर सिन्हा ,
निषेध –जगदीश चतुर्वेदी ,
पहचान – अशोक वाजपेयी ,
संचेतना –प्रदीप सिंह,नरेन्द्र मोहन।

646. कैकयी ,कर्ण ,ऋतंभरा..... केदारनाथ मिश्र'प्रभात' की रचना है।

647. निम्न ग्रंथों में निम्न सर्ग है –
प्रथ्वीराज रासो(69) , पद्मावत (57),
साकेत(12),प्रियप्रवास(17),कामायनी(15)पारिजात(15) ,एकलव्य (14)

648. कुछ प्रमुख ग्रंथ व उनके रचियता –
विक्रमादित्य – गुरूभक्त सिंह अरूण (1944) ,
आर्यावर्त –मोहनलाल महतो (1943) ,
उन्मुक्त –सियाराम शरण गुप्त
पार्वती , अहिल्या – रामानंद तिवारी (भारतीनंदन भरतपुर),
एक पुरूष और (डॉ. विनय), पूर्णांगनी(डॉ.चातक) ,
साकेत का सन्त(बलदेव प्रसाद मिश्र) – नायक भरत ,
संत सिपाही(उदयभानु हंस)–नायक गुरू
गोविन्द सिंह ,
उर्मिला ,
प्राणार्पण(गणेश शंकर विद्यार्थी) –(दोनो बालकृष्ण नवीन) उर्मिला में 16
सर्ग/आहुति , जिसमें 4 सर्ग विरह के है, व प्राणार्पण में 4 सर्ग है।

नल नरेश (पुरोहित प्रकाश नारायण) – 21 सर्ग है,
त्रेता के दो वीर , हल्दीघाटी(21 सर्ग) – (दोनो श्याम नारायण पाण्डेय कृत) ,

649. वाम आन्दोलन कविता के प्रवर्तक – शलभ श्री रामसिंह (युयुत्सा, पत्रिका निकाली)

650. 'आज' की कविता के समर्थक – हरीश भादानी (वातायन, पत्रिका का संपादन)

651. सनातन सूर्योदय आंदोलन के प्रवर्तक – वीरेन्द्र कुमार जैन
(भारती , नामक पत्रिका का संपादन)

652. सहज विता आन्दोलन का प्रवर्तक – राकेश वत्स (कुछ विद्वान– रवीन्द्र भ्रमर 1964)

653. समकालीन कविता के प्रवर्तक – डॉ. विश्वम्भर दयाल उपाध्याय

654. मैथिलीशरण गुप्त –
प्रथम कविता – हे कविते
भारत–भारती – मुसद्दसे हाली के आधार पर
मंगल घट –हिन्दू केशो की कथा व स्वर्ग सहोदर रचना
झंकार – रहस्यवादी गीत

MANAV SHARMA

यशोधरा – चम्पू काव्य

द्वापर(विधृता) का नायक – चैतन्य महाप्रभु

655. द्रौपदी – नरेन्द्र शर्मा की रचना है।

656. रूपतरंग – रामविलास शर्मा की रचना है।

657. डॉ. विनय मोहन शर्मा व प्रभाकर माचवे ने 'माखन लाल चतुर्वेदी'को छायावाद क प्रवर्तक माना है।

658. नंद किशोर आचार्य का सम्बन्ध ,राजस्थान से है , चतुर्थ तारसप्तक में इनकी कुल 141 कविताएँ संग्रहित है।

659. लीलाधर जगूंड़ी की प्रसिद्ध कविता – बलदेव खटीक

660. सोहन लाल द्विवेदी , राष्ट्रीय काव्य धारा के कवि है ,इनकी रचनाएँ है – कुणाल , चित्रा , युगधारा

661. पत्थर की पुकार ,प्रतिमा ,चक्रवर्ती का स्तम्भ ,खंडहर की लिपि आदि जयशंकर प्रसाद की कहानियॉ है।

662. रासो शब्द की उत्पत्ति –

गार्सा दा तासी – राजसूय से , नरोत्तम स्वामी – रसिक शब्द से

रामचन्द्र शुक्ल – रसायन शब्द से हजारी प्रसाद द्विवेदी – रासक शब्द से

663. अंग्रेजी छंद सोनेट का जनक – त्रिलोचन है ,

664. हाइकू का जनक – प्रभाकर माचवे है।

665. कुमार अजय को अपनी राजस्थानी भाषा की कृति 'संजीवणी'पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी का युवा पुरस्कार मिला है , जिसमें 50000 रू. व ताम्रफलक इनाम है।

666. 'साहित्य संदेश' का प्रकाशन बाबू गुलाब रॉय ने आगरा से किया।

667. 'विशाल भारत'पत्रिका कलकत्ता से बनारसी दास चतुर्वेदी ने निकाली ,वे निराला के प्रति बहुत अनुदार थे।

668. 'कादम्बरी' के सम्पादक – राजेन्द्र अवस्थी

669. महात्मा गॉधी ने 'हिन्दी नवजीवन' नामक पत्र का संपादन किया।

670. 'आलोचना' का संपादन डॉ. नामवर सिंह ने किया । (राजकमल प्रकाशन)

671. 'नंदन' जयप्रकाश भारती द्वारा सम्पादित बाल–पत्रिका है।

672. 'रविवार' पत्रिका के सम्पादक – उदयन शर्मा थे

673. प्रवृत्ति के आधार पर नामकरण वाला काल – रीतीकाल

674. प्रथ्वीराज रासो के सम्बन्ध में 'अर्धप्रमाणिक'धारणा सर्वाध्कि उपयुक्त है।

675. 'संचेतना' मनोहर श्याम जोशी की पत्रिका है।

676. 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' नामक पत्रिका का प्रकाशन डॉ. महीप सिंह ने किया।

677. 'स्त्री दर्पण(1909–24)' के बीच इलाहाबाद से रामेश्वरी नेहरू ने निकाली

678. 'पंच परमेश्वर' निबंध प्रताप नारायण मिश्र का है।

679. वररूचि ,द्वारा लिखित रचना –प्राकृत प्रकाश

680. 'हिन्दु पंच' पत्रिका कलकत्ता से 1926 में ईश्वर दत्त शर्मा ने निकाली, 1930 में इसका 'बलिदान'अंक निकला

681. लुईपा की प्रसिद्ध पंक्ति – ''काआ तरूवर पंच विडाल , चंचल चीर पइठोकाल'.....' पंच विडाल , बौद्ध धर्म में 5 प्रतिबन्धों (आलस्य ,हिंसा,काम,मनाचिकित्सा,मोह) के नाम है , पंच विकार सूफी(निर्गुण) में भी है ।

682. महासुख –साधक का शून्य में विलीन हो जाना ,जिसे सिद्धों ने युग्नद्ध भावना द्वारा

MANV SHARMA

विकसित किया है। आलिंगनबद्ध मूर्तियॉ इसी का प्रतीक है।

683. सिद्ध साहित्य का विकास – हिन्दी के पूर्वी क्षेत्रों में हुआ।

684. 84 सिद्धों में से खास 9 नाथों को 'नवनाथ' कहा गया।

685. गोरक्षसिद्धान्त संग्रह के सम्पादक ''कवि राजगोपीनाथ '' थे।

686. गोपीनाथ के अनुसार मार्ग प्रवर्तक निम्न है –
नागार्जुन ,जड़भरत ,हरिश्चन्द्र ,भीमनाथ ,गोरक्षनाथ ,चर्पटनाथ ,जलन्धर नाथ ,मलयार्जुन

687. 'छुप छुप अश्रु बहाने वालो , मोती व्यर्थ लुटाने वालो.....' – गोपाल दास नीरज

688. जात–पॉत पूछे नहि कोई , हरि को भजे सो हरि को होई..... रामानंद

689. इतिहास लेखन के प्रति भारतीय दृष्टिकोण – आदर्शवादी व आध्यात्म मूलक है।

690. इतिहास लेखन के प्रति पाश्चात्य दृष्टिकोण – विकासवादी दृटिकोण है।
(इसी कारण पश्चिम में प्राणीशास्त्र आधारित डार्विन का विकासवाद ,
अर्थशास्त्र आधारित मार्क्स का विकासवाद व भौतिक शास्त्र पर आधारित
स्पैंसर का विकासवाद मान्यता प्राप्त कर सका।)

691. हिरोडोट्स (456–545 ई.)के अनुसार –' इतिहास मानविकी आधारित एक वैज्ञानिक विद्या है , जो तथ्य , प्रमाण व निष्कर्ष को आधार बनाकर अतीत के आलोक में भविष्य पर प्रकाश डालता है। '

692. इतिहास की परिभाषा देने वाले विद्वानों में विको , कालिंगवुड , ई.एच.कार प्रमुख है।

693. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धतियॉ –
(a) वर्णानुक्रम पद्धति – गार्सा–दा–तासी , शिवसिंह सैंगर
(b) कालानुक्रम पद्धति –जार्ज ग्रियर्सन , मिश्रबन्धु
(c) वैज्ञानिक पद्धति –रामचन्द्र शुक्ल (हिन्दी साहित्य लेखन का वास्तविक सूत्रपात कर्ता)
(d) विधेयवादी पद्धति – इसके जन्मदाता ''वेन'' नामक विद्वान है।
जाति , वातावरण व क्षण विशेष पर केन्द्रित

694. काव्यशास्त्रीय संस्कृत आचार्य –मम्मट , भोज , कुन्तक ,क्षेमेन्द्र आदि सभी आदिकाल की ही देन है।

695. आदिकाल में सर्वाधिक साहित्य जैनों ने लिखा,जिसका सर्वाधिक प्रचार गुजरात में हुआ।

696. जैनो की शैली के चरीतकाव्य , दोहा–चौपाई शैली की रचनाऍ है।

697. नागरी प्रचारिणी सभा का गठन 1893 में बाबू श्यामसुन्दर दास ने किया ।

698. आदिकाल में मनोरंजक साहित्य 'अमीर खुसरो ' ने लिखा।

699. 'रासक' अपभ्रंश का शब्द है , जिसे 29 मात्राऍ होती है ।

700. 'इतिहास केवल घटनाओं का अन्वेषण एवं संकलन मात्र नही है , अपितु उसके भीतर कार्य–करण श्रंखला विद्यमान है।' (हीगल के अनुसार)

701. आरोही क्रम :–
(अ)मिश्र बन्धु विनोद –हिन्दी साहित्य का इतिहास – हिन्दी साहित्य की भूमिका – हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
(ब)परमचरिउ–महापुराण–ढ़ोला मारू रा दोहा–सन्देश रासक
(स)चंदरबरदाई –अमीर खुसरो–विद्यापति–कबीर
(द)सरहपा–शबरपा–कण्हपा–डोम्मिपा
(य)सरस्वती–इन्दु–माधुरी–हंस

MANAV SHARMA

(र)बीसलदेव रासो –प्रथ्वीराज रासो –हम्मीर रासो –विजयपाल रासो

(य)सन्तकाव्य –सूफीकाव्य –रामकाव्य–रीतीबद्ध काव्य

(र)कविवचनसुधा–हिन्दी प्रदीप–सरस्वती–इन्दु

(ल)चन्द्रायन–मृगावती–पद्मावत–मधुमालती–अनुराग बॉसुरी

(व)ढ़ोला मारू रा दोहा–सरस्वती कथा –मधुमालती–चित्रावली

(स)सूरदास–मीरा–नंददास–रसखान

(श)कुम्भनदास–सूरदास–कृष्णदास–नंददास–गोविन्दस्वामी–चतुर्भुज दास

702. कबीर की उलटबासियों में अद्भुत रस का वर्णन हैं

703. 'गहना एक कनक ते गहना , इन मुँह भाव न दूजा....'पंक्ति में कबीर स्वयं वैदान्त दर्शन से प्रभावित दिखाई देते है।

704. कबीर ने सूफी सतसंग से प्रेम , हिन्दु शास्त्रों से ज्ञानमार्गी बाते ,वैष्णवों से अहिंसा , नाथों से उलटबासियॉ व कुण्डली जागरण का समावेश अपने ग्रंथों में किया है।

705. कबीर को शुक्ल ने 'निर्गुण मार्ग का निर्दिष्ट प्रवर्तक' कहा है।

706. ऋग्वेद में पुरूरवा–उर्वशी प्रेमाख्यान का वर्णन है।

707. महाभारत में नल दमयन्ती प्रेमाख्यान का वर्णन है।

708. हरिवंश पुराण में कृष्ण–रूकमणि प्रेमाख्यान का वर्णन है।

709. डॉ. नगेन्द्र ने सूफी मत का आदिस्त्रोत –शामी जातियों की आदिम प्रवृत्ति को माना है।

710. जैन कवि बनारसीदास चतुर्वेदी ने अपने आत्मचरित में मधुमालती व मृगावती का उल्लेख किया है।

711. गौरा बादल का उल्लेख पद्मावत प्रेमाख्यान में है।

712. बारहमासा का वर्णन आषाढ़ मास से शुरू होता है।

713. शुक्ल ने प्रेमाख्यानक लेखक हिंदू कवियो में 'सूरदास पंजाबी' को शामिल किया है।

714. राधावल्लभ सम्प्रदाय में गद्दी सेवा का विधान हैं

715. 'श्रंगार रस मंडन' विट्ठलनाथ की रचना है।

716. कृष्णभक्त कवियो में सर्वाधिक रचनाएँ लिखने वाला कवि – ध्रुवदास (42)

717. गोसाईं विट्ठलनाथ श्रंगार रस के कवि थे ,इनका जन्म 1515 ई. में हुआ था।

718. नाभादास , राम के उपासक थे।

719. प्राकृत भाषा में 'हाल' द्वारा रचित 'गाहा –सतसई (गाथा सप्तसई)' में राधा–कृष्ण के श्रंगार का उल्लेख है।

720. भट्ट नारायण के नाटक वेणीसंहार में कृष्ण ,रूठी रानी से अनुनय विनय करते है।

721. बंगाल के बैष्णव सहजिया सम्प्रदाय में राधा–कृष्ण भक्ति वर्णन में कृष्ण को रस एवं राधा को रति नाम दिया गया है।

722. कृष्ण भक्ति सम्प्रदायों में कृष्ण का स्वरूप –

सम्प्रदाय	कृष्ण का स्वरूप	प्रवर्तक आचार्य
वल्लभ सम्प्रदाय	पूर्णानंद परबृहम पुरूषोत्तम	वल्लभाचार्य
निम्बार्क	राधा कृष्ण की युगल मूर्ति	निम्बकाचार्य
राधावल्लभ	राधा ही प्रमुख है , कृष्ण ईश्वरों के भी ईश्वर है	हितहरिवंश
हरिदासी	निकुंज बिहारी कृष्ण	स्वामी हरिदास
गौड़ीय / चैतन्य	ब्रजेन्द्र कुमार कृष्ण	चैतन्य महाप्रभु

MANAV SHARMA

723. भक्ति के 3 मार्ग है ' मर्यादा मार्ग ,प्रवाह मार्ग,पुष्टि मार्ग ।

724. वल्लभाचार्य ने निम्न 4 गंथ लिखे –
पूर्व मीमांसा भाष्य ,श्रीमद्भागवत सूक्ष्मटीका ,तत्वदीप निबंध ,अणुभाष्य
(ब्रह्मसूत्रों पर आधारित अधूरा ग्रंथ – पुत्र विट्ठलनाथ ने पूरा किया।)

725. वल्लभ सम्प्रदाय की अष्टयाम सेवाविधि
–मंगलाचरण,श्रंगार,ग्वाल,राजभोग,उत्थान,भोग,संध्या आरती,शयन।

726. कृष्ण भक्त कवियों की चर्चा निम्न ग्रंथो में हुई है – 84 वैष्णवन की वार्ता ,252 वैष्णवन की वार्ता, (दोनो गोसाई गोकुलनाथ कृत) ,भक्तमाल(नाभादास) ,
भावप्रकाश(हरिराय) , वल्लभ दिग्विजय (यदुनाथ)

727. हिन्दी में कृष्ण को काव्य विषय बनाने का सर्वप्रथम प्रयास – कवि विद्यापति

728. कृष्ण चैतन्य के शिष्य – जीव गोस्वामी ,रूप गोस्वामी(उज्ज्वल नीलमणि के लेखक), सनातन गोस्वामी ।

729. नंददास की गोपियॉ , सूरदास से अधिक तर्कशील है , जबकि सूर की गोपियॉ नंददा से अधिक भावुक है।

730. छीतस्वामी का जीवनकाल 1515–1585 ई. माना जाता है।

731. कहानी'हिदी के फूल' के डाकू का नाम – तेजसिंह

732. महाकवि कालिदास के 'रघुवंश' नामक ग्रंथ में 10–15 में सर्ग में रामकथा वर्णित है।

733. रामभक्ति की अन्य रचनाऍ – कवित्त रत्नाकर(सेनापति) ,
रामरासो, आध्यात्म रामायण (माधवदास चारण) ,
हनुमान नाटक(हरदयराम) ,
रामायण महानाटक(प्राणचंद चौहान 1610)
अवध विलास (लालदास 1643) ,
पौरूषैय रामायण(नरहरि बारहट) ,
रामायण(कपूरचन्द त्रिखा) ,
रघुनाथ चरित , दशावतार चरित (परशुराम देव–निम्बार्क में रसिक शाखा के प्रवर्तक व सगुण–निर्गुण उपासक) ,
रघुनाथ लीला(राधावल्लभ सम्प्रदाय के माधवदास जगन्नाथी)।

734. आधुनिक भारतीय भाषाओ में रामकथा –
बंगला – कृतिवासी रामायण (कृतिवास)
तमिल – कम्ब रामायण (कम्ब)
तेलगू – रंग रामायण(रंग) , भास्कर रामायण (भास्कर)
मराठी – भावार्थ रामायण (एकनाथ) , रामायण (वेणाबाई देशपाण्डे), अर्धरामायण,सुन्दर रामायण,मंगल रामायण , संकेत रामायण (चारो गिरधर स्वामी)
असमिया – कीर्तनिया रामायण(अनंत कंदली) ,पद रामायण(माधवकन्दली), गीती रामायण(संत शंकरदेव– असम का चैतन्य महाप्रभु) , कथा रामायण (माधवदेव)
गुजराती – गुजराती रामायण (कवि मालव)

735. प्रसिद्ध विद्वान मधूदन सरस्वती से तुलसी का शास्त्रार्थ हुआ था , प्रशंसा में उन्होनें तुलसी को 'काशी के आनंदवन का चलता–फिरता पौधा' कहा।

736. नवीन प्रसंगो की उद्भावना में सूरदास तुलसी से भी आगे है ,

MANAV SHARMA

737. सूरदास की रचनाओं में संस्कृत की कोमलकान्त पदावली व अनुप्रासों की वह छटा है ,जो तुलसी में दिखाई नहीं देती।

738. विनयपत्रिका में निम्न राग है – कान्हरा ,रामकली,वसन्त,मल्हार,केदारा ,भैरव ,बिलावल,टोडी,सोरठ।

739. नवधा भक्ति का स्वरूप तुलसी की विनयपत्रिका रचना में है।

740. अमरकांत की कहानी डिप्टी कलक्टरी का मुख्य पात्र शकलदीप बाबू है।

741. पउमचरिउ , स्वयंभु ने लिखा जबकि 'पउमचरियम' विमल सूरी की रचना है।

742. सूरदास विरचित 'सूरसागर' के प्रथम एवं नवम स्कन्धों में रामकथा से सम्बन्धित पद है

नवम स्कन्ध में 158 पदों में सम्पूर्ण रामकथा वर्णित हैं।

743. नंददास , पुष्टिमार्ग में विट्ठल नाथ से दीक्षा से पूर्व रामभक्त थे।

744. 'दुलाईवाला'कहानी 1907 में सर्वप्रथम सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई थी

745. कृपानिवास पदावली(कृपानिवास कृत) में रामकथा के अन्तर्गत अश्लील पदावली का समावेश है।
यह गोस्वामी तुलसीदास की शुद्ध सात्विक रामभक्ति को विकृत करने का प्रयास है।

746. 'शरणदाता' अज्ञेय की कहानी है।

747. रचना कौशल ,प्रबन्ध पटुता ,सहृदयता आदि रामचरित मानस के खास गुण है , जबकि प्रसंगानुकूलता ,रसानुकूल शब्द चयन ,पात्रानुकूलता व आनुप्रासिकता इसके अन्य गुण है।

748. उपमा ,रूपक ,उत्प्रेक्षा आदि रामभक्त कवियों के खास गुण है।

749. कृष्णभक्त कवियों के लिये उपजीव्य सामग्री श्रीमदभागवत पुराण से प्राप्त हुई।

750. महाभारत के आरण्यक पर्व में रामकथा वर्णित हैं

751. विष्णुपुराण ,वायुपुराण ,भागवत पुराण में भी रामकथा का कुछ अंश है।

752. बौद्ध धर्म की जातक कथाओं में 'अनार्मक जातक'कथा में रामकथा वर्णन हैं

753. जैन काव्य 'महापुराण ' (पुष्पदंत कृत)में रामकथा वर्णन है।

754. महावीर चरित(भवभूति की रचना) में रामकथा है।

755. क्षेमेन्द्र की दशावतार चरितम व रामायण मंजरी ,व जयदेव की 'प्रसन्न राघव' में रामकथा वर्णन हैं।

756. तुलसी के राम – 'शील ,शक्ति व सौन्दर्य ' की खान है।

757. रामकथा का सबसे मार्मिक प्रसंग – चित्रकूट प्रसंग

758. ज्ञान भक्ति का विशद विवेचन रामचरित मानस के उत्तरकाण्ड में है।

759. 'दूलह राम सीय वैदेही...' गीतावली की पंक्ति है।

760. 'बालधि विसाल विकराल ज्वाल जाल मानो , लंक लीलीबे को काल रसना पसारी है....' (कवितावली)

761. 'अवधेश के बालक चारि सदा ,तुलसी मन मंदिर में विहरै..... ' (कवितावली)

762. राम के बाल रूप की सर्वाधिक झॉकी – कवितावली

763. तुलसी के द्वारा सूर के बालरूप की झॉकी – गीतावली

764. 'केशव कहि न जाय का कहिये.....' – तुलसीदास

765. ब्रजभाषा में गद्य रचना – व्यंग्यार्थ कौमुदी (प्रतापसिंह) की है , वृत्त कौमुदी(मतिराम) , कविता कौमुदी(रामनरेश त्रिपाठी) ,

MANAV SHARMA

सिद्धान्त कौमुदी(भट्टो जी दीक्षित) , लघु सिद्धान्त कौमुदी (बरदराज) की रचना है।

766. विनयपत्रिका का प्रधान रस शान्त रस है , पंक्ति है – अब लौ नसानी अब न नसैहो... – जाके प्रिय न राम वैदेही.....,, (तुलसी ने मीरा का लिखा)

767. तुलसी का दार्शनिक मत – विशिष्टाद्वैतवाद ।

768. रामकथा में रसिकता का समावेश – अग्रदास

769. रामकथा में श्रंगारी भावना का प्रवर्तक – रामचरणदास

770. रामचरित मानस का प्रारंभ तुलसी ने 'अयोध्या' नामक स्थान से किया हैं।

771. नारदमुनि ने ईश्वरीय प्रेम को 'भक्ति' की संज्ञा है।

772. रामानंद की शिष्य परंपरा में तुलसी 14 वीं पीढ़ी में आते है।

773. भक्तमाल में 200 भक्तों के चरित्र का वर्णन है।

774. नाभादास ने तुलसी को 'कलिकाल का वाल्मिकी' कहा है।

775. रामभक्ति शाखा में सखी भाव की उपासना पद्वति का प्रवर्तक – जीवाराम जी

776. 'हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हौं.....' – तुलसीदास

777. सही आरोही क्रम :–

ईश्वरदास –तुलसीदास –केशवदास – नाभादास
कबीरदास –दादूदयाल–मलूकदास – सुन्दरदास
भरत विलाप–विनय पत्रिका–रामचन्द्रिका –कवित्त रत्नाकर
रामरक्षास्त्रोत–रामचरितमानस–रसिक प्रिया–हनुमान्नाटक–रामचरित मानस–अवध विलास
सूरसागर – रामचरितमानस –रामचन्द्रिका –प्रियप्रवास

778. सन्त कवियों के दार्शनिक विचार – भारतीय दर्शन से प्रभावित थे।

779. सूरदास की भक्ति का माधुर्य भाव कृष्ण लीलाओं में मिलता है।

780. चण्डी चरित(गुरूगोविन्द सिंह) ,रसिक मोहन(रघुनाथ बंदीजन का अलंकार निरूपण ग्रंथ) ,रघुनाथ अलंकार , रस दर्पण (सेवादास) ,वृत्त विचार(सुखदेव मिश्र) , वाणी भूषण (रामसहाय) , की रचनाएँ है।

781. मृदुला गर्ग को 'मिलजुल मन' नामक उपन्यास को साहित्य अकादमी पुरस्कार 2013 प्राप्त हुआ था।

782. 'रसीदी टिकट'अमृता प्रीतम की आत्मकथा है , अमृता की कृति 'पिंजर' नामक बहुचर्चित फिल्म बनी है।

783. पद्मा सचदेव , आधुनिक डोगरी कविता की शुरूआत करने वाली कवियित्री है ,जिन्हें पद्मश्री और साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

784. पूर्णिमा वर्मन , का जन्म 1955 में पीलीभीत (उत्तरप्रदेश)में हुआ , इन्होनें स्वतंत्र्योत्तर संस्कृत साहित्य पर शोधकार्य किया है और ये लम्बे समय से हिंदी को दो स्तरीय और लोकप्रिय बेबसाइटो का सम्पादन कर रही है।

785. तुलसी की पत्नि , रत्नावली ने 'रत्नावली दोहा संग्रह' नामक रचना लिखी ,वे स्वयं भी अच्छी कवियित्री थी।

786. कृष्णा सोबती ,अपनें तालों के लिए भी प्रसिद्ध रही है।

787. पुष्पा भारती (धर्मवीर भारती की पत्नि) विश्वप्रसिद्ध लेखको और कलाकारों की प्रेमगाथाएँ लिखने वाली साहित्यकार /साक्षात्कारक है।

788. राजा जनक की सभा में शास्त्रार्थ करने वाली दो विदुषियॉ गार्गी व मैत्रेयी कवियित्री भी

MANAV SHARMA

थी , उनकी इस प्रतिभा का उल्लेख 'आश्वलायन गृह सूत्र' नामक ग्रंथ में मिलता है।

789. नृप शम्भु (शिवाजी महाराज के पुत्र) ने नायिका भेद , नखशिख ,सातसप्तक नामक रचनाएँ लिखी। (1657ई.)

790. रीतीकाल को हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उत्तरमध्यकाल कहा।

791. मतिराम वृन्द , बिहारी ने सतसई ग्रंथों की रचना है।

792. छत्र प्रकाश ,लाल कवि की रचना है ,यह एक चरित काव्य है।

793. हम्मीर हठ , ग्वाल कवि ने भी लिखा है।

794. रीतिकालीन खास रचनाएँ –

रस विलास –मण्डन , रतन हजारा –रसनिधि अलंकार पंचाशिका – मतिराम

श्रंगार मंजरी –चिन्तामणि , रस मंजरी – भानुदत्त आनंद रघुनंदन – रघुनंदन

सनेह सागर (–लेखक –बख्शी हंसराज लाला , सम्पादक–भगवानदीन)

तुलसी भूषण – रसरूप (तुलसीदास के ग्रंथो से उदाहरण छॉटकर) ,

अलंकार चन्द्रोदय – रसिक सुमति

वरवधु विनोद – कालिदास त्रिवेदी की नायिका भेद की रचना ,

रस भूषण – याकूब खॉ

गोविन्द रघुनंदन –रसिकनंदन

राधासुधानिधि – श्री हरिणी

795. डॉ. नगेन्द्र ने रीती ग्रंथकारों को कवि शिक्षक आचार्य कहा है।

796. 'रनित भ्रंग घण्टावली झरित डाल मधु नीर.....' (बिहारी द्वारा शरद ऋतु का वर्णन)

797. रीतिकाल में रचित अधिकांश ग्रंथ – मुक्तक काव्य शैली में है।

798. रीती ग्रंथकारों द्वारा किये गये 'नायिका भेद' निरूपण का आधार ग्रंथ वात्स्यायन का कामसूत्र है।

799. डॉ. नगेन्द्र ने रीतिकाल के आचार्यो की 3 कोटियॉ मानी है –
– उद्भावक (नवीन सिद्धान्त प्रतिपादक)
– व्याख्यात्मक (स्थापित मत का व्याख्याकार) ,
– कवि शिक्षक (काव्यशास्त्र को सरस रूप में प्रस्तुत करना)

800. महाभारत और हरिवंश का पद्य अनुवाद कवि 'गोकुलनाथ गोपीनाथ' ने किया।

801. 'पौन मया करि घूंघट टरै ,दया करि दामिनी दीप दिखावै.....' पंक्ति के रचियता नागरीदास है।

802. कवि रसनिधी का वास्तविक नाम – प्रथ्वीसिंह था।

803. रसिक गोविन्द की प्रमुख रचनाएँ – युगलरस ,कलियुग रासो ,गोविन्दानंदघन

804. शुक्ल ने बेनीप्रवीन को मतिराम व पद्माकर के समकक्ष माना है।

805. शुक्ल ने 'रस रहस्य' (कुलपति मिश्र) को 'काव्यप्रकाश का छायानुवाद कहा है।'

806. महाभारत का दोहा–चौपाई शैली में अनुवाद – सबल सिंह

807. 'मरै बैल गरियार मरै वह अड़ियल टट्टू .....व

MANAV SHARMA

'वामन सौ मरि जाय हाथ जो मदिरा जावै.....' – बैताल।

808. 'मूलन ही की जहॉ अधोगति.....' – केशवदास

809. 'जै तो नीचौ ह्वै चले , ते तो ऊँचो होय.....' – बिहारी

810. खास पुस्तके –
बिहारी और देव (लाला भगवानदीन) , देव और विहारी (कृष्ण बिहारी मिश्र)
विहारी और वाग्विभूति (विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) , देव और उनकी कविता (डॉ. नगेन्द्र)

811. ब्रजभाषी दास , रीतिकालीन नाटककार थे।

812. 'पूरन प्रेम को मंत्र महा मनि.....' – घनानंद

813. वल्लभ सम्प्रदाय का वार्ता साहित्य विट्ठल नाथ व गोसाईं गोकुलनाथ के वचनामृत पर आधारित है , जिसे लिपिबद्ध करने का कार्य श्री कृष्ण भट्ट , कल्याण भट्ट ,व

हरिराय (ब्रजभाषा का सर्वश्रेष्ठ गद्यकार)ने किया।

814. बैताल पचीसी की रचना ,1710 में सुरमि मिश्र ने की।

815. आइने अकवरी की वचनिका , लाला हीरालाल ने 1795 में किया।

816. रामचन्द्रिका की टीका 1817 में जानकीप्रसाद ने किया।

817. 'भारतेन्दु युग यदि आधुनिक काल का प्रवेश द्वार है ,तो द्विवेदी युग उसका विस्तृत प्रांगण है।

818. द्विवेदी युग की सर्वश्रेष्ठ 3 पत्रिकाऍ – सरस्वती ,प्रभा , मर्यादा'

819. आधुनिक काल का भूषण – अनूप शर्मा को कहा जाता है।

820. हिन्दी नयी कविता में 'लघु मानव'की महत्ता के संस्थापक विजयदेव नारायण साही है , इनकी रचनाऍ है – मछलीघर , अलविदा ,संवाद तुमसे(1990) , साखी।

821. छायावाद में महामानव , प्रगतिवाद में शोषित मावन व प्रयोगवाद या नयी कविता में लघु मानव की प्रतिष्ठा की स्थापना है।

822. श्रीकांत वर्मा को 'मगध'रचना के लिए 1987 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

823. चन्द्रकांत देवताले को 'पत्थर फैंक रहा हूँ ' रचना पर 2012 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।

824. राजेश जोशी ने भर्तृहरि की कविताओं का अनुवाद 'भूमि का कल्पतरू यह भी' नाम से एवं 'मायकोवस्क'विद्वान की कविता का अनुवाद 'पतलून पहिना बादल'शीर्षक से किया है। राजेश जोशी को इनके उपन्यास 'मोहनदास'के लिए 2010 का साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।

825. वीरेन्द्र डंगवाल को 'दुश्चक्र में स्त्रष्टा' के लिए 2004 का साहित्य अकादमी मिला

826. ज्ञानेन्द्रपति को 'हवा में हस्ताक्षर'रचना के लिए– 2008 का साहित्य अकादमी पुरस्कार

827. सुरेश वात्स्यायन ने 'मंत्र कविता' शीर्षक से स्वतंत्र काव्य आन्दोलन द्वारा काव्य में सांस्कुतिक तत्वो व उदात्त
मूल्यों की प्रतिष्ठा पर बल दिया।

828. हरिवंश राय बच्चन को 'क्षयी रोमांस का कवि' व 'प्रबंध शिरोमणि'कहा जाता हैं।

829. प्रणय पत्रिका ' बच्चन में अपने लन्दन प्रवास के दौरान लिखी थी।

830. बच्चन ग्रंथावली में कुल 10 खंड है।

831. आत्मपरिचय बच्चन ने लिखी जबकि आत्मकथ्य प्रसाद ने लिखा है।

832. साहित्य – 'स+हित+य' अर्थात 'एकत्र होना' , 'मिलना' (गद्य–पद्य के वे कल्पनाप्रसूत ग्रंथ जिनमें ज्ञान संबंधी स्थायी विचार लिखे रहते है , उसे ''साहित्य'' कहते है।)

MANAV SHARMA

833. फ्रैंच विद्वान 'तेन' ने साहित्य में 3 तत्व प्रमुख माने थे – जाति, वातावरण, व क्षण–विशेष। (हडसन ने 'प्रतिभा'को भी माना)

834. मूल गोसाईं चरित की रचना बाबा बेनीमाधवदास ने 1687 वि. में की थी।

835. गुरू ग्रंथ साहब की रचना 1661 वि. में गुरू अर्जुन देव ने की थी। (9 वें गुरू)

836. विदेशी विद्वानो की रचनाओं में 'बेसकट' का ''कबीर एण्ड दी कबीरपंथ '' व 'ब्रिग्स'(1955 वि.) की ''गोरखनाथ एण्ड दि कनफटा योगीज'' नामक रचनाएँ प्रमुख है।

837. निराल को छायावाद,प्रगतिवाद व प्रयोगवाद का प्रवर्तक माना जाता है।

838. डॉ. नगेन्द्र का जीवनकाल – 1915 से 1999(27 अक्टूबर को देहांत) है।

839. बाबू श्यामसुन्दर दास की 2 रचनाएँ प्रमुख है – हिन्दी कोविद माला (1909–1914 ई.),हिंदी भाषा और साहित्य (1920 ई.)

840. प्रगतिवाद को साम्यवादी युग भी कहा जाता है।

841. 'सुकवि सरोज'(1927 ई.) , श्री गौरीशंकर द्विवेदी की रचना है , तुलसीदास का जन्मस्थान 'सौंरो' सर्वप्रथम इसी पुस्तक में स्वीकृत किया गया था।

842. हिन्दी साहित्य के आदिकाल/शिशुकाल /प्रारम्भिक काल को ही आदिकाल कहा जाता है।(हर्षवर्धन का पतन काल)

843. डॉ. नगेन्द्र के अनुसार भाषा की दृष्टि से अपीभ्रंश का बढ़ाव या विकसित रूप ही आदिकाल कहा जाता है।

844. चन्द्रधर गुलेरी ने उत्तर अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' कहा था , जबकि डॉ. भोलाशंकर व्यास ने हिन्दी के आरंभिक रूप(उत्तर अपभ्रंश) को 'अवहट्ठ' कहा है। जबकि रामचंद्र शुक्ल ने इसे 'प्राकृताभास हिन्दी' कहा है।

845. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल को 'अत्यधिक विरोधो व व्याघातों का युग'कहा।

846. शुक्ल के अनुसार आदिकाल का समय , महाराज भोज के समय से लेकर हम्मीर देव के समय के कुछ पीछे तक माना जाता है।

847. आठवीं–बारहवीं सदी, हिन्दुत्व के पतन व इस्लाम के धीरे–धीरे उदय होने की कहानी है।

848. आदिकाल की समय सीमा – ग्रियर्सन(643–1400 ई.) , मिश्रबन्धु(643–1389 ई.), राहुल सांस्कृत्यायन(760–1300ई) , रामचन्द्र शुक्ल(993–1318 ई.) , डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल(1000–1343 ई.)

849. युगलशतक (1595 ई.)के रचनाकार है – श्रीभट्ट

850. ध्रुवदास ने ब्रजलीला , हित श्रंगारलीला ,जीवनदशालीला, मान लीला , दान लीला की रचना की। (इनके रचित कुल 42 ग्रंथों के अंत में लीला है।)

851. बीरबल का वास्तविक नाम 'महेश भट्ट' था , , बीरबल उपाधि इन्हें अकबर ने दी , 'कवित्त संग्रह' बीरबल की रचना है , जिसे उन्होनें 'ब्रह्म'उपनाम से लिखी। इसकी हस्तलिखित प्रति भरतपुर के संग्रहालय में मौजूद है। अपने चुटकलों के कारण बीरबल को अकबर ने नगरकोट(कांगड़ा जिला) का न्यायाधीश भी बनाया था।

852. जटमल कवि ने 'गोरा बादल की कथा(1623 ई.)' लिखी , जो कि गद्य व पद्य दोनों में उपलब्ध होती है।

853. भक्तिकाल में पृथ्वीराज ने 'वेलि किसन रुकमणि री'पृथ्वीराज कथा लिखी । ये बीकानेर के संस्थापक राव बीकाजी के वंशज थे , वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित पृथ्वीराज , अकबर के दरबारी कवि थे , लेकिन महाराण प्रताप के प्रति अपार श्रद्धा भाव रखते थे।

MANAV SHARMA

854. सुजान चरित(सूदन) , नैन पचासा(मण्डन) , नयन पचीसी(वृन्द) की रचनाएँ है।

855. रसिक गोविन्द का विशालकाय ग्रंथ है – गोविन्दानंदघन (4 प्रबंधो में विभाजित)

856. 'व्यंग्यार्थ कौमुदी' व 'काव्यविनोद' के लेखक – प्रतापसाहि।

857. 'तिरियातेल हम्मीर हठ ,चढ़ै न दूजी बार....' ग्वाल कवि (कृत हम्मीर हठ से)का कथन है। भक्तिभावना इनकी सबसे बड़ी मुक्तक रचना है , जबकि 'इश्कलहरदरयाब'एक प्रबंधात्मक रचना है।

858. 'बेनी प्रवीन' को 'प्रवीन ' की उपाधि 'भंड़ौ आकार बेनी' द्वारा प्रदान की गई।

859. सेवादास के गुरू का नाम 'अलबेले लाल जू' था , सेवादास ने इन पर रचना भी लिखी।

860. रसनिधी का मूल नाम 'पृथ्वीसिंह' था , इन्होने 'रतनहजारा' नामक प्रसिद्ध रचना लिखी(बिहारी सतसई के अनुकरण पर)।

861. उत्तरभारत में खड़ी बोली को अपने साहित्य का माध्यम बनाने वाले प्रथम साहित्यकार – गंग भाट (17 वीं सदी)चंद छंद...

862. दक्षिण भारत में खड़ी बोली में साहित्य सृजन करने वाले साहित्यकार – मुल्ला वजही (रचनाएँ –सबरस , कुतुब मुश्तरी)

863. आचार्य शुक्ल के अनुसार शुद्ध व परिमार्जित खड़ी बोली के प्रथम लेखक – रामप्रसाद निरंजनी , ये पटियाला दरबार में रहते थे और वहॉ की महारानी को कथा बॉचकर सुनाया करते थे। (रचना–भाषा योग वशिष्ठ , 1741 ई.)

864. आचार्य शुक्ल के अनुसार शुद्ध व परिमार्जित खड़ी बोली के द्वितीय लेखक – दौलतराम (रचना– पद्मपुराण , 1771 ई,)
इन्होने हरिषेणाचार्य द्वारा रचित'जैन पद्मपुराण' का खड़ी बोली में अनुवाद किया।

865. 'नसिकेतोपाख्यान'(सदल मिश्र) का अन्य नाम 'चन्द्रावती' है।

866. फ्रेडरिक पिंकाट ने 'बालदीपक'(4 भाग ,नागरी व कैथी अक्षरों में रचित, बिहार के स्कूलो मेंचलती थी), विक्टोरिया चरित्र

867. 16 जुलाई , 1893 ई. में स्थापित काशी नागरी प्रचारिणी सभा हेतु डॉ. श्यामसुन्दर दास , रामनारायण मिश्र व शिवकुमार सिंह ने योगदान किया। इसमें बाबू श्यामसुन्दर दास ने 1900–1908 ई. तक व श्यामबिहारी व शुकदेव बिहारी मिश्र ने 1908–1916 तक योगदान किया। इन्होनें 1896 ई. से काशी से 'नागरी प्रचारिणी सभा'नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी शुरू किया। इसके प्रथम अध्यक्ष थे – राधाकृष्ण दास

868. सरस्वती पत्रिका – सर्वप्रथम प्रकाशन 1900 ई. से शुरू हुआ , डॉ बच्चन सिंह के अनुसार – 'इस पत्रिका के प्रकाशन का निश्चय एक बंगाली सज्जन 'चिंतामणि घोष''ने किया , जो कि इंडियन प्रेस , इलाहाबाद के मालिक थे। घोष के अनुरोध पर नागरी प्रचारिणी सभा काशी ने इसका संपादन दायित्व सॅभाला । यह मासिक पत्रिका थी , जिसका प्रारम्भ में काशी से एवं बाद में द्विवेदी के समय से इलाहाबाद से प्रकाशन होने लगा।

प्रथम वर्ष संपादक–श्यामसुन्दर दास , राधाकृष्णदास,जगन्नाथदास,कार्तिक प्रसाद ,किशोरी लाल गोस्वामी (1900 ई. में)

द्वितीय बर्ष , तृतीय बर्ष (1901–02 ई. में)– श्यामसुन्दर दास

तृतीय बर्ष से (1903 –1920 ई. तक) – महावीर प्रसाद द्विवेदी

1920–1947 ई. तक – देवीदत्त शुक्ल

NAVAV SHARMA

नोट – शुक्ल ने इस पत्रिका को '20 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल का विश्वकोश'कहा हैं।
–द्विवेदी की 'हे कवित्त'कविता सरस्वती के जून,1900 ई. के अंक में छपी थी।

869. लाला भगवानदीन ने लक्ष्मी नामक पत्रिका का संपादन किया व 'दीन'उपनाम से कविताएँ लिखी।

870. डॉ. नगेन्द्र के अनुसार –सोहन लाल द्विवेदी ने, अत्यंत सरल भाषा में राष्ट्रीय चेतना की कविताएँ लिखी
इनकी प्रमुख रचनाएँ है '– भैरवी , विषपान ,कुणाल , चित्रा , सेवाग्राम आदि।

871. देवकीनंदन 'विभव' ने 'कुसुमांजलि'नामक रचना जेल में लिखी थी। (भारत छोड़ो आन्दोलन में जेल पर)

872. विद्यापति 'कोकिल' को डॉ. शिवकुमार शर्मा ने अपने ग्रंथ 'नया हिंदी–काव्य' में प्रथम श्रेणी का आधुनिक गीतकार कहा है।

873. डॉ. गणपति चंद्र गुप्त ने रामेश्वर करुण की कविता –'करुण सतसई'को प्रगतिवाद की पहली कविता माना व रामेश्वर को पहला कवि माना है।

874. डॉ. रणजीत (प्रगतिवादी कवि) की रचनाओं में साम्यवाद का विरोध देखने को मिलता है , अतः इन्हें 'विद्रोही/गद्दार कवि' भी कहा जाता है।

875. मेघराज मुकुल , राजस्थान के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रगतिवादी कवि है, जिनकी रचनाएँ मजदूरों के प्रति प्रेम की है।

876. तीसरे तारसप्तक से प्रभावित होकर नलिनी विलोचन शर्मा ने अपने दो साथियों 'केसरी कुमार' व 'नरेशकुमार'को मिलाकर 'नकेनवाद' बनाया। इसे प्रपद्यवाद भी कहा जाता है। डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार यह 'रूपवाद' या 'कलावाद' ही है।
(प्रपद्यवाद , प्रयोग को साधन नहीं, साध्य मानता है।)

877. प्रगतिवाद , 'विचारधारा को महत्व(सामाजिक भावना की प्रधानता) 'देता है , जबकि प्रयोगवाद 'अनुभव को महत्व'(व्यक्तिगत भावना)देता है। प्रगतिवाद कविता में विषयवस्तु को अधिक महत्व देता है , जबकि प्रयोगवाद कविता में कलात्मकता को महत्व देता है।

878. भारत भूषण अग्रवाल की रचनाएँ – छवि के बंधन (प्रेम–सौन्दर्य) ,
उतना वह सूरज है (1978 का साहित्य अकादमी)
इनके अन्य गीत है – लालसेना का गीत , लाल जवानों का पानी ,लाल निशान।

879. जैन अपभ्रंश साहित्य में चूनरी(धार्मिक सदाचार), चर्चरी(गुणों का बखान), कुलक(उपदेश)ग्रंथों की रचना हुई।

880. डिंगल का नामकरणः–
–डॉ. एल.पी. टेसीटरी के अनुसार– अनियमित/गॅवारू से बना है डिंगल
–हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार – डगल से बना है डिंगल
–गजराज ओझा के अनुसार –'ड़'शब्द की अधिक आवृत्ति से नाम पड़ा है डिंगल
–पुरुषोत्तम स्वामी के अनुसार– डिम(डमरू की ध्वनि)+गल(गला/बोली/बालक की भाषा) ,
–मोतीलाल मेनारिया के अनुसार – डिंगल का अर्थ है 'डींग हॉकने वाला'

881. आदिकाल में 'प्राकृत का व्याकरण' वररुचि ने लिखा जबकि 'सिद्ध हेम अनुशासन'नामक ग्रंथ की रचना हेमचन्द्र ने की, जिन्हे ''अपभ्रंश का वैयाकरण'' भी कहा जाता है।

882. कबीर ने उलटबासियॉ 'नाथ'संप्रदाय से ग्रहण की है , उदाहरण देखिए–
– एक अचम्भा सुना रे भाई , ठाड़ा सिंह चरावै गाई ,
– जल की मछली तरवर ब्याही,कुत्ता कूँ ले गई बिलाई।।
– सागर बीच मीन पियासी , मोय सुन–सुन आवै हॉसी।

MANAV SHARMA

– कबीर तेरी उल्टी बानी , बरसे कम्बल , भीगे पानी।

883. शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में तुलसीदास को 19 पृष्ठ, निराला को 4 व महादेवी वर्मा को 1 पृष्ठ दिया है।

884. मध्यकालीन संत परंपरा में छत्तीशगढ़ी शाखा के प्रवर्तक धर्मदास थे , इस सम्प्रदाय की धर्मदासी शाखा वर्तमान में धामखेड़(छत्तीशगढ़) में स्थित है।
(धनौति शाखा के प्रवर्तक थे – भगवान गुसॉई)

885. **सम्प्रदाय व उनके प्रवर्तकः–**

निर्मल सम्प्रदाय – वीर सिंह , नामधारी सम्प्रदाय – भाई राम सिंह ,
सुथराशाही सम्प्रदाय – सुथरा शाह , सेवापंथी सम्प्रदाय– कन्हैया
, अकाली सम्प्रदाय (खालसा पंथ,सर्वश्रेष्ठ सिक्ख,नीले वस्त्र,नीले साफ के नीचे पीला कपड़ा बॉधने वाले) – निहंग उर्फ निर्भीक ,
बावरी पंथ–रामानंद(लिकिन लोकप्रियसंत–पलटु साहब) ,
धामी सम्प्रदाय–प्राणनाथ धौलपुर ,
सतनामी सम्प्रदाय – जगजीवन साहब,
धनेवरी/जोगीदास सम्प्रदाय–बाबा धरणीदास व इनके गुरू विनोदानंद ,
शिवनारायणी संप्रदाय–गुरू दुखहरण व शिवनारायण ,
चरणदास संप्रदाय–चरणदास की शिष्या सहजोबाई ,
रामस्नेही संप्रदाय– रामचरणदास के द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय थें।

886. पद्मनाभ का कान्हड़दे प्रबन्ध(15 वीं शताब्दी), राजस्थानी भाषा में भक्तिकालीन नीतिकाव्य है।

887. भक्तिकालीन दरबारी काव्यों में पृथ्वीराज राठौर की''वेलिक्रिसन रुकमणि री '' (पृथ्वीराज कथा)प्रमुख रचना है।

888. 'भीतर –भीतर सब रस चूसे , बाहर से तन मन धन मूसे , जाहिर बातन में अति तेज ,क्यों सखि साजन नहीं अंगरेज' पंक्ति भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पंक्ति है।

889. 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' हारी प्रसाद द्विवेदी की रचना है।

890. 'दसवीं से चौदहवी सदी का काल, जिसे हिंदी का आदिकाल कहा जाता है , भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश का ही बढ़ावा है।'उक्त कथन हजारी प्रसाद द्विवेदी का है।

891. शुक्ल ने वीरगाथा काल में साहित्यिक पुस्तको की संख्या 4 मानी है। (विजयपाल रासो,हम्मीर रासो,कीर्तीलता,कीर्तीपताका) , जबकि शुक्लानुसार आदिकाल में देशभाषा काव्य में पुस्तको की संख्या 8 है।

892. अपभ्रंश शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग – वल्लभी राजा धारसेन के द्वितीय शिलालेख में मिलता है।

893. हिन्दी साहित्य का आरंभ अपभ्रंश से माना जाता हैं।

894. 'उस समय जैसे'गाथा' या 'गाहा'कहने से प्राकृत का बोध होता था,वैसे ही 'दोहा' या 'दूहा'कहने से अपभ्रंश का'' । उक्त कथन रामचन्द्र शुक्ल का है।

895. अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी के पद्यों के उदाहरण ''बौद्धों'' में मिलते है।

896. शुक्ल ने महाराजा भोज से लेकर हम्मीरदेव के समय को आदिकाल माना है।

897. भरत मुनि का समय (विक्रम पॉचवी शताब्दी) , भामह का समय (विक्रम सातवी सदी)

898. शुक्ल के अनुसार गोरखनाथ का समय , पृथ्वीराज चौहान के समय का है।

899. नागार्जुन , नाथों में प्रथम गिने जाते थे।

MANAV SHARMA

900. नागार्जुन , गोरखनाथ ,चर्पटनाथ व जलंधरनाथ 'सिद्ध व नाथ दोनो' में गिने जाते हैं।

901. सबसे पुराने सिद्ध – सरहपा

902. जोई–जोई पिण्डे सोई ब्रह्माण्डे ' नाथों का सिद्धान्त है।

903. विद्यापति ने कीर्तीलता को भृंग–भृगी संवाद के रूप में चित्रित किया है।

904. गीतांजलि , (रवीन्द्रनाथ टैगोर) को 1913 ई. में नोबेल पुरस्कार मिला।

905. निम्बकाचार्य ने दाम्पत्य भक्ति को सर्वश्रेष्ठ माना हैं।

906. ढोला मारू रा दोहा–सत्यवती
कथा–मधुमालती–चित्रावली–बीजक–मृगावती–विनयपत्रिका

907. पृथ्वीराज रासो के अनुसार , पृथ्वीराज ने मुहम्मद गौरी से कहा कि – ''एक राजपूत की ऑखे सिर्फ तभी झुकती है , जब एक राजपूत इस दुनिया से विदा हाता है ।'' ऑखे दिखाते पृथ्वीराज की इस बात को सुनकर मोहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज की ऑखे फोड़ दी।

908. कबीर–रैदास–नानक–सुन्दरदास (बढ़ता क्रम)

909. सुखमनी , बाबन अखरी ,बारहमासा के रचनाकार – गुरू अर्जुनदेव

910. पद्मावत की हस्तलिखित प्रतियॉ – फारसी भाषा में मिली है।

911. जायसी को 'एक ऑख वाला कवि' भी कहा जाता है।

912. चन्दायन – मृगावती–पद्मावत –मधुमालती (बढ़ता क्रम)

913. इतिवृत्तात्मकता , द्विवेदी युग की प्रवृत्ति है , भारतेन्दु की नही।

914. आरोही क्रम :–
ॲधेर नगरी–अजातशत्रु–आषाढ़ का एक दिन–कल्पतरू
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र –महावीर प्रसाद द्विवेदी–रामचंद्र शुक्ल–रामविलास शर्मा
भारतेन्दु–बद्रीघन–राधाकृष्णदास–नवनीत चतुर्वेदी
श्रीनिवासदास–देवकीनंदन खत्री–प्रेमचंद–जयशंकर प्रसाद
अष्टयाम–84 वैष्णवन की वार्ता– वैशाख महात्म्य (भारतेन्दु हरश्चन्द्र) –बैताल पच्चीसी(सुरति मिश्र)

915. दूसरी कविता की खोज , नयी कविता के प्रतिमान – नामवर सिंह
(नोट –'कविता के नये प्रतिमान– लक्ष्मीकांत वर्मा ' की रचना है।)

MANAV SHARMA